www.thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

मार्च 2017

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

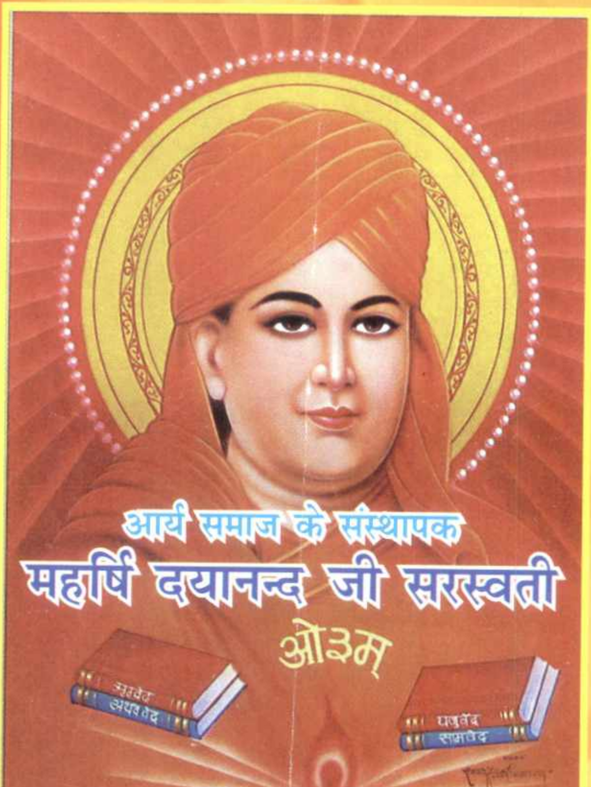

विक्रमी संवत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 2074, 28 मार्च 2017
आर्य समाज स्थापना दिवस पर आप सभी के उज्जवल भविष्य
के लिए हार्दिक शुभकामनाएं

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आगामी आयोजित योगशिविर एवं यज्ञोत्सव कार्यक्रम

(1) निःशुल्क ध्यानयोग शिविर एवं बृहद्यज्ञ 27 मार्च सोमवार से 2 अप्रैल रविवार तक। विवरण कवर पृष्ठ 3 पर देखें। (2) त्रिदिवसीय यज्ञ शिविर स्वामी विवेकानन्द रोजड़ की अध्यक्षता में 30 जून शुक्रवार से 2 जुलाई रविवार तक। (3) आश्रम का स्वर्णजयन्ति महोत्सव 1 सितम्बर शुक्रवार से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ आरम्भ 2 अक्टूबर सोमवार 51 कुण्डों में यज्ञपूर्णाहुति। इस शुभावसर पर विविध सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा और भव्य स्मारिका का प्रकाशन होगा। आप सभी से निवेदन है कि स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने लेख और अपनी फर्म के विज्ञापन प्रकाशनार्थ भेजकर स्मारिका की शोभा बढ़ाएं और कार्यकर्त्ताओं को उत्साहित करें। (4) पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज मुख्यधिष्ठाता के 82वें जन्मदिवस पर बृहद् यज्ञ एवं निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन 20 नवम्बर सोमवार को विशाल स्तर पर किया जाएगा।

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

941
डॉ. दीपक कुमार जी
निरोग कुंज, प्राकृतिक चिकित्सा एवम् योग केन्द्र, म.न. 1281, सैक्टर-7, बहादुरगढ़, झज्जर, हरियाणा, मो. 9467876646

942
श्री संतलाल जी अध्यापक
सैक्टर-6, बहादुरगढ़, झज्जर, हरियाणा

हमारे यहां सभी रोगों का ईलाज योग एवम् प्राकृतिक विधि से किया जाता है।

चि.अक्षित और चि.दुष्यन्त सुपौत्र डॉ. सज्जन कुमार जी मलिक, मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़, झज्जर, हरियाणा

प्रिय बन्धुओं! मास मार्च में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अप्रैल अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

- व्यवस्थापक

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

फाल्गुन-चैत्र सम्वत् 2073 मार्च 2017

सृष्टि सं. 1972949117 दयानन्दाब्द 193

वर्ष-16) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-3

(वर्ष 47 अंक 3)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर.

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
तू जनों की ज्योति है	5
दुःख-सुख विवेचना	6
हिम्मत मत हारिये	7
संध्या क्यों करनी चाहिए	8
भजन	10
यात्रा	11
बेहाल और निहाल	12
हमारी तथा पश्चिमी संस्कृति का तुलनात्मक दृष्टिकोण	13
ईश्वर तू महान है	13
कमर दर्द में करें ताड़ासन	17
पहचाना जिसने माता-पिता को	18
दो वेद-मन्त्र युवाओं के लिए	19
हंसो और हंसाओ	20
अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव	21
दुनियां का बादशाह	22
होली कैसे मनाएं	23
आया होली का त्यौहार	24
नवजीवन, नवोत्साह एवं साहसी देशभक्त वीरों के.....	25
जिन्दगी	28
आर्यसमाज स्थापना दिवस 10 अप्रैल के अवसर.....	29
होली पर्व	31
शहीदे आजम पण्डित श्री लेखराम जी आर्य मुसाफिर...	32
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

www.thearyasamaj.org

स्वामी शक्तिवेश बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया

वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर के तत्वावधान में आर्यजगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी शक्तिवेश जी का 28वां बलिदानदिवस मोहल्ला टिल्ला शिव मन्दिर के सामने चौक में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य बालेश्वर रहे यजमान देवेन्द्र पंडित रहे और कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी धर्ममुनि जी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ने की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता कवि सम्राट सारस्वत मोहन मनीषी दिल्ली रहे उन्होंने अपनी कविता पाठ से जनसमुदाय को देश भक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत किया। और खुब तालियां बटोरी वीर रस की कविताओं और स्वामी शक्तिवेश के जीवन पर आधारित कविताओं को सुनकर श्रोता मन्त्र मुग्ध हो गए।

अहिंसा सर्वोतम मन की कस्तुरी है। दुष्ट नहीं माने तो हिंसा बहुतजरूरी है। कवितापाठ को बहुत सराहाया गया। स्वामी धर्ममुनि, आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, सत्यपाल वत्स यज्ञ मुनि सूर्य देव, प्रेमदेव खुडन, आचार्य अरविन्द गार्गी, पं. जयभगवान आर्य, मण्डल समिति अध्यक्ष पं. रमेश चन्द्र वैदिक, आदि ने अपने सम्बोधन में स्वामी शक्तिवेश जी द्वारा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, वैदिक आश्रम रिवाड़ी, गुरुकुल घासेड़ा किशनगढ़ में किए गए सुधार कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला और उनकी सेवाओं से प्रेरणा लेने का आहवान किया और उनके बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। यही उनकी सच्ची श्रद्धांजलि है। उनके मिशन को पुरा करना ही हमारा कर्त्तव्य है। उनका जीवन, त्याग और सेवा से परिपूर्ण रहा जो कि अनुकरणीय है। 9 फवरी को कर्णसिंह सुपुत्र ओमप्रकाश यादव के संयोजन में कार्यक्रम हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द पलवल और श्री क्रान्तिकारी अत्तरसिंह हिसार मुख्य वक्ता रहे। पं. रमेश चन्द्र वैदिक, श्री धनीराम बेधड़क मथुरा, ईश्वरसिंह तुफान ने अपने मधूर भजनों के द्वारा स्वामी दयानन्द का सन्देश दिया और वेदों के अनुसार अपना जीवन यापन करने पर बल दिया। कार्यक्रम का संयोजन पं. जयभगवान आर्य ने किया और प्रबन्ध व्यवस्था श्री वेदप्रिय आर्य ने की। कार्यक्रम सुबेदारभरतसिंह, यज्ञमुनि, रावरतीराम, ओमप्रकाश यादव, भगवानसिंह आर्य, भूराज आर्य, सुभाष आर्य, शतक्रतु आचार्य, दीपक, हिमांशु, विजय, कुणाल, रोहित आदि बहुसंख्या में महिला पुरुष उपस्थित रहे। अन्त में भन्डार का आयोजन किया गया।

रमेश चन्द्र वैदिक, वैदिक सत्संग मण्डल समिति

श्रीमती राजकुमारी आर्या दिवंगत

श्री घनश्याम दास जी (पुरूषार्थमुनि) सेना से अवकाश प्राप्त श्रीमती राजकुमारी अरोड़ा पत्नी के साथ आत्मशुद्धि आश्रम द्वारा संचालित वैदिक वृद्धाश्रम में लगभग 18 वर्ष से सत्संग स्वाध्याय साधना कर रहे हैं। आप दोनों वैदिक संस्कारों से प्रभावित हैं। यज्ञ आदि में विशेष रूची रखते हैं। अत्यन्त दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि 11 फरवरी शनिवार 2017 को ब्रह्ममुहुर्त में प्रात: 4 बजे दिल्ली के स्कोर्ट हॉस्पीटल में आप का निधन हो गया। आप अत्यन्त यज्ञ प्रेमी श्रद्धालु अतिथि सेवीका थी आप सुन्दर भजन भी बोलती थी। वृद्धाश्रम की सदस्या के जाने से सभी आश्रमवासियों को अत्यन्त कष्ट का अनुभव किया। 11 फरवरी सायंकाल नोएडा, श्मशान घाट में आप का अन्तिम संस्कार कर किया गया और 14 फरवरी आर्य समाज नोएडा, सैक्टर-2, सायं 4 बजे श्रद्धांजलि सभा रखी गई भारी संख्या में परिवार और रिश्तेदारों ने श्रद्धांजलि दी। श्रीमती राजकुमारी के निधन पर आत्म शुद्धि आश्रम के सभी सदस्य कार्यकर्त्ता ट्रस्टी एवं अधिकारीगण हार्दिक दु:ख व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्म की सदगति एवं परिवार जनों को दु:ख सहन करने की शक्ति की प्रार्थना करते है।

- व्यवस्थापक विक्रम देव

www.thearyasamaj.org

वेद सन्देश

तू जनों की ज्योति है

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

नि त्वामग्ने मनुर्दधे, ज्योतिर्जनाय शश्वते।
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो, यं नमस्यन्ति कृष्टय:॥

ऋग् 1.36.19

ऋषि-**कण्व:घौर:**। देवता **अग्नि:**। छन्द:**बृहती।**

(अग्ने) हे अग्रणी परमात्मन्। **(मनु:)** मननशील मनुष्य **(त्वां)** तुझे **(नि दधे) (हृदय में)** निहित करता है। **(तू)** (शश्वते) सनातन **(जनाय) (आत्मारूप)** जन के लिए (ज्योति:) ज्योति (है)। **(ऋतुजात:)** सत्य के द्वारा प्रकट, **(उक्षित:) [आत्मसमर्पण की हवि से]** सिक्त (तू) **(कण्वे)** मेधावी के अन्दर (दीदेथ) प्रदीप्त होता है, (यं) जिसे **(कृष्टय:)** साधक-जन **(नमस्यन्ति)** नमस्कार करते हैं।

हे अग्निस्वरूप अग्रणी परमात्मन्! जैसे यजमान अरणि-मन्थन के द्वारा यज्ञाग्नि को प्रकट कर यज्ञ कुण्ड में निहित करता है, वैसे ही मननशील मनुष्य तुम्हें हृदय में निहित करता है। जैसे अरणियों में पहले से ही विद्यमान अग्नि को भी मन्थन के द्वारा प्रकट करना पड़ता है, ऐसे ही यद्यपि तुम प्रत्येक के हृदय में पहले से ही वर्तमान हो, तो भी ध्यान-रूप मन्थन से तुम्हें प्रकट करने की आवश्यकता होती है। पूर्व ही सर्वत्र विद्यमान तुम्हारे विषय में 'हृदय में निहित करना' आदि भाषा प्रयोग तुम्हें उद्‌बुद्ध या प्रकट करने के अर्थ में ही हम करते हैं। जब तुम हृदय में निहित या प्रबुद्ध हो जाते हो, तब सनातन जीवात्मा के लिए दिव्य ज्योति का काम करते हो, अँधियारे तमस् में तुम्हारी प्रकाश-रेखा उसे जीवन-पथ दर्शाती है।

हे प्रकाशक प्रभु! तुम 'ऋतजात' हो, सत्य से प्रकट होते हो। जब तक मन सत्य के द्वारा निर्मल नहीं हो जाता, तब तक उसमें तुम्हारे चरण नहीं पड़ते। मन में असत्य को धारण किये रखकर देवार्चना के विषय में सोचना आत्म-प्रवंचना करना और जगत् को छलना है। जब तुम 'कण्व' की, मेधावी साधक की मनोवेदि में सत्य के द्वारा व्यक्त हो जाते हो और उसके आत्म-समर्पण की घृताहुति से सिक्त होते हो, तब तुम्हारी आभा दर्शनीय होती है। तब ऊँची-ऊँची ज्वालाओं से देदीप्यमान होती हुई यज्ञाग्नि के समान तुम अदभ्र ज्योतिवाले प्रकाशपुंज के रूप में दिखाई देते हो। तुम्हारी उस जगमग ज्योति के प्रति कृष्टि-जन, योग-साधना की कृषि करने वाले साधक-जन, शतश: नमस्कार करने लगते हैं। हे तेजोमय प्रभु! अपनी वह दिव्य ज्योति हम 'कण्वों' के हृदयों में भी उद्‌भासित करो, हमें भी अपना कृपापात्र बनाओ, हमारे भी तमोजाल को निरस्त करो। हम भी 'मनु' बनकर तुम्हें अपनी हृदय-वेदि में निहित कर रहे है, अग्न्याधान कर रहे हैं।

-वेदमञ्जरी

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है और दिव्य फार्मेशी पतंजलि उत्पादन वस्तुए भी प्राप्त हैं।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

दु:ख-सुख विवेचना

चक्रवत् परिवर्तन्ते सुखानि च दु:खानि च।
- कालिदास

उपरोक्त सुक्ति में कालिदास जी कहते हैं कि सुख-दु:ख का जीवन में चक्र चलता रहता है। वह जीवन की परछाया है। संसार में कहीं भी एक व्यक्ति भी आपको ऐसा नहीं मिलेगा कि जिसको कभी दु:ख ने नहीं सताया हो और न ही कोई ऐसा परिवार मिलेगा जिस परिवार में कभी बन्धु-बान्धव आदि सम्बन्धियों की मृत्यु न हुई हो आंख से आंसू न गिरे हों। यह दु:ख जिस समय आता है अकस्मात् आता है। किसी गाड़ी आदि वाहन की चपेट से, व्यापार में घाटा अन्य बीमारियां आदि के माध्यम से आता है।

इस संसार में राजा-रंक साहूकार, भिखारी आदि कोई भी हो पूर्ण रूप से सुखी नहीं मिलेगा। धन है तो संतान न होने से दु:खी है, कुछ ऐसे है जिनके पास स्त्री-बच्चे हैं पर पालन पोषण के लिए धन न होने से दु:खी है। ऐसे व्यक्ति भी देखने में आते हैं, मकान, पत्नी, बच्चे, धन-धान्य से भरपूर हैं, परन्तु सदैव अस्वस्थ, रोगी रहते हैं। हर समय दु:ख ही दु:ख, रोना धोना बना रहता है। किसी कवि ने सुन्दर कहा है-

देह धरे का दन्ड है, सब काहू को होये।
ज्ञानी भुक्ते ज्ञान से, मूर्ख भुक्ते रोये।।

स्मरण रहे, जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार हमारे साथ चल रहे हैं। अत: प्रारब्ध अनुसार न्यून या अधिक प्रत्येक शरीरधारी प्राणी को निश्चित रूप में इच्छा-अनिष्छा से दु:ख भोगना ही पढ़ता है। **''अवश्यमेव मोगतव्यम् कृतम् कर्म शुभाशुभम''।**

दु:ख सुख का चक्कर तो गाड़ी के पहिए की तरह निरन्तर चलता ही रहता है। आप सूर्य से शिक्षा ले सकते है। प्रात: उदय के बाद सायं सूर्य अस्त होता है, सायं के बाद पुन: प्रात: सूर्य उदय होता है। ऐसे आज दु:ख है तो कल सुख भी होगा। **''दु:ख के पीछे सुख है पगले, काहे को घबराए''** कुछ व्यक्ति कहते हैं कि प्रात: सूर्य उदय और सायंकाल समय अस्त होने का निश्चित है। पर दु:ख और सुख का तो समय निश्चित नहीं है। इस विषय में यह समझें कि पतझड़ के बाद वृक्ष पर पते, फल और फूल लगते हैं और समय आने पर समाप्त हो जाते हैं। हमारे द्वारा किए गये शुभ-अशुभ कर्मो का फल इसी तरह चलता रहता है।

सुख दु:ख, हानि-लाभ, यश-अपयश, दुर्भाय-सौभाग्य, संयोग वियोग आदि द्वन्द्वों के चक्कर में प्रत्येक व्यक्ति आता-जाता रहता है। अत: दोनों स्थितियों में सम्भाव रखे बिना शान्ति नहीं मिलती है। ऋषियों ने द्वन्द्वों को सहन करना ही तप बताया है ''तपो द्वन्द्व सहनम्'' दु:ख है क्या? ''अनुकूल वेदनीयं सुखम्, प्रतिकूल वेदनीयं दु:खम्'' जो बात या कार्य हमारे अनुकूल होता है उसमें हम सुख का अनुभव करते हैं और प्रतिकूलता में हम दु:खी होते हैं। 'सुखस्य-दु:खस्य न कोऽपि दाता, परो ददाति कुबुद्धिरेसा' सुख-दु:ख को देने वाला कोई दूसरा नहीं अपितु हमारी कुबुद्धि के कारण ही दु:ख आता है। अत: सहन करें और ये भावना बनाएं।

तेरे फूलों से भी प्यार,
तेरे कांटो से भी प्यार।
जो कुछ देना चाहे, दे दे,
करतार दुनियां के पालनहार।

दु:ख का मूल कारण हमारी वासनाएं हैं, हम इन्द्रियों के दास है। ''पराये अधीन स्वप्ने ही सुख नाहि'' दूसरों के अधीन जो कुछ भी सब दु:खरूप ही है। वही जो कुछ भी अपने अधीन है वह सुख रूप ही है। सत्यता तो ये हैं कि सुख में दु:ख और दु:ख में सुख निहित है। इस प्रकार भी समझ सकते हैं जैसे जल में कीचड़, कीचड़ में जल के समान सुख दु:ख एक दूसरे के पूरक हैं।

उपरोक्त वक्तव्य से आप भली-भांति समझ गये होंगे कि संसार में कोई भी मनुष्य सुख-दु:ख से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं है। बस अन्तर इतना है कि ज्ञानवान मनुष्य हंसते-हंसते सहन कर लेता है और मूर्ख रोता रहता है। अन्त में उसे भी सहन ही करना पड़ता है। सो दु:ख का मुकाबला करो, इसी फाल्गुन मास में शिवरात्रि बोधरात्रि पर्व है। बालक

www.thearyasamaj.org

मूलशंकर की तरह बोध प्राप्त करें। मूलशंकर ने बहिन-चाचा की मृत्यु रूपी दु:ख से छूटने का मार्ग अपना लिया। घर के सभी सुखों को छोड़, दु:खों, कष्टों का स्वागत किया।

अन्त में एक बात आपको विशेष बता देना चाहता हूं कि सुख में मन और बुद्धि की नियामक शक्ति का ह्रास होता है और दु:ख की भट्टी में पड़कर मन निर्विकल्प और बुद्धि परिष्कृत हो जाती है। ऐस होने पर मनुष्य आरोहन करता है। उन्नति होती है। संसार में जितने भी महान् व्यक्ति हुए है सभी दु:ख रूपी भट्टी में पड़कर ही चमके हैं। सोना तप कर ही कुन्दन बनता है। अत: कल्याणार्थी को चाहिए कि ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए, सुख-दु:ख में समन्वय भाव रखते हुए, जैसी भी परिस्थिति हो उसे स्वीकार कर अपने कर्तव्य पथ पर कर्मयोगी की भांति प्रभु पर विश्वास रखते हुए निरन्तर आगे ही आगे चलता रहे। घबराओ मत रास्ते पर निकल पड़ो, रास्ता ही तुम्हें रास्ता दिखाएगा। वहां निर्बलों को राह मिल ही जाती है। इस पार दु:ख है उस पर सुख है। आनन्द प्रभुभक्ति परसेवा और त्याग में है, स्वार्थ एवं भोगविलास में नहीं।

भरोसा रख प्रभु पर तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जाएगा तुझे रोना नहीं होगा।

-धर्ममुनि

हिम्मत मत हारिये

दु:ख भी मुझे प्यारे हैं, सुख भी मुझे प्यारे हैं।
छोड़ूं मैं किसे भगवन् दोनों ही तुम्हारे हैं।।
दोनों ही तुम्हारे हैं....

सुख दु:ख ही दुनिया की गाड़ी को चलाते हैं।
सुख दु:ख ही हम सबको इंसान बनाते हैं।।
संसार की नदियों के दोनों ही किनारे हैं।।
दोनों ही तुम्हारे हैं.....

दु:ख चाहे न कोई भी, सब सुख को तरसते हैं।
दु:ख में सब रोते हैं सुख में सब हंसते हैं।।
सुख मिले उसी को पीछे, जो दु:ख के सहारे है।
दोनों ही तुम्हारे हैं.....

सुख में तेरा शुक्र करूं दु:ख में फरियाद करूं।
जिस हाल में रखे, दाता, तुझको ही याद करूं।।
मैंने तो तेरे आगे, ये दोनों हाथ पसारे हैं।
दोनों ही तुम्हारे हैं.....

जो है तेरी रक्षा इसमें देखूँ मै पकड़ कैसे।
मैं कैसे कहूं मेरे, कर्मो के हैं ये फल कैसे।
चख कर न देखूंगा मीठे हैं या खारे हैं।
दोनों ही तुम्हारे हैं....

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

www.thearyasamaj.org

संध्या क्यों करनी चाहिए?

- डॉ. गंगा प्रसाद उपाध्याय

संध्या के विरूद्ध आक्षेप: संध्या करने की आवश्यकता के विषय में लोगों के मनों में अनेक शंकाएँ उठती रहती हैं। जो ईश्वर के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करते उनके लिए तो संध्या व्यर्थ ही है, परन्तु जो ईश्वर को सर्वनियन्ता मानते हैं वे भी सोचते हैं कि ईश्वर हमको हमारे कर्मो के अनुसार फल देता है, अत: उसका यशोगान करने से चाटुकारिता के सिवाय और क्या हो सकता है? कुछ लोगों का यह भी कहना है कि जो लोग संध्या करते हैं उनके लिए यह आवश्यक नहीं कि उनके आचरण संध्या न करनेवालों की अपेक्षा अच्छे ही हों। बहुत-से संध्या करनेवाले दम्भी, ठग, मिथ्याभिमानी और चरित्रहीन भी पाए गए हैं और बहुत-से संध्या न करनेवाले सदाचारी, सत्यभाषी और भले भी पाए जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो संध्या इसी प्रयोजन से करते हैं कि ईश्वर उनको उनके बुरे कर्मो का कड़ा दण्ड न दे। प्राय: यह प्रसिद्ध है कि परमात्मा अपने भक्तों की सहायता करता है और उनके बुरे कर्मो को उपेक्षा की दृष्टि से देखता हैं। भक्त कसाई, भक्त वेश्या, भक्त ठगों की कहानियाँ संसार के सभी मतों और देशों में पाई जाती है। बहुत से ईश्वर के नाम का इसीलिए जाप करते हैं कि उनको उनके पिछले पापों का दण्ड न मिले। इन सब बातों को देखकर विचारशील लोग कहते हैं कि यदि ये सब बातें ठीक हैं तो फिर संध्या करने से क्या लाभ? अपना आचरण ठीक करो जिससे भविष्य उज्जवल हो। संध्या करने में व्यर्थ समय क्यों गँवाया जाए?

संध्या भी एक आचरण है- संध्या के पक्षपाती कहते हैं कि आचरणों में तो संध्या भी एक आचरण है। जो संध्या नहीं करता वह अपने को पूरा सदाचारी नहीं कह सकता, क्योंकि पूरा सदाचारी नहीं कह सकता, क्योंकि पूरा सदाचारी बनने के लिए संध्यारूपी एक अंग को छोड़ना नहीं चाहिए। यह युक्ति सर्वथा बलहीन तो नहीं है, परन्तु ऐसी भी नहीं है जो संध्या के विरोधियों को संतुष्ट कर सके। क्योंकि इस युक्ति के अनुसार, संध्या करना, सदाचार के अनेक अंगों में से एक छोटा-सा अंग रह जाता है जिसकी उपेक्षा की जा सकती है। लोग कह सकते हैं कि न सही पूरे सदाचारी, अधिकांश सदाचारी तो हैं ही, अत: इतने से काम चल जाता है। अधिक की आवश्यकता नहीं।

ईश्वर को संध्या से क्या मिलेगा?- संध्या करनेवालों की ओर से कहा जाता है कि ईश्वर ने हमको सब-कुछ दिया है। उसका धन्यवाद न करके हमको कृतघ्नता का पाप लगता है। यह बात तो ठीक ही है, परन्तु इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि कृतज्ञता का यह अर्थ नहीं कि इतनी लम्बी-चौड़ी संध्या की जाए। ईश्वर तो हमारे हृदयों को जानता है। हम मन में कह लेते हैं कि ''ईश्वर, तू धन्य है! तूने हम पर अपार दया की।'' इससे अधिक की आवश्यकता नहीं, क्योंकि हमारे धन्यवाद-गान से ईश्वर को तो कुछ मिलेगा नहीं, न उसकी प्रसन्नता में कुछ अन्तर आएगा। हमको कोई विशेष लाभ नहीं।

संध्या तोता-रटन नहीं- यह तो ठीक ही है कि नाममात्र रटने या कोरे जाप से कोई लाभ नहीं। योगदर्शन में जहाँ ईश्वर के जाप का विधान है वहाँ स्पष्ट है कि **''तज्जपस्तदर्थभावनम्''** अर्थात् ओ३म् के जप के साथ उसके अर्थो की भावना भी अवश्य करनी चाहिए। तोते के समान रटने से कोई लाभ नहीं।

मार्ग पर चल तो पड़े- हम इस विषय में इतना कहेंगे कि कोरे जाप में भी किंचित लाभ तो अवश्य है, अर्थात् यद्यपि इस मार्ग का गामी उद्दिष्ट स्थान पर नहीं पहुँच सकता, परन्तु वह उस मार्ग पर कुछ पग तो चल ही रहा है। न चलनेवाले से कुछ चलनेवाला अच्छा है। जो तोते के समान बे-समझे संध्या रटता है उसको सच्चा गुरु मिलने पर शीघ्र ही अर्थ समझने का लाभ प्राप्त हो सकेगा। उसके पास एक आरम्भिक वस्तु है, बीज है, उसे वृक्षरूप करके उसमें फल लाना है। यह लाभ है तो अत्यन्त स्वल्प, परन्तु जो कोई आरम्भ करेगा वह यहीं से आरम्भ करेगा। अर्थ तो शनै: शनै: आगे को आवेंगे, अत: उस प्रथम कार्य की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमको यह नहीं कहना चाहिए कि संध्या रटने से कुछ लाभ नहीं। हमको पूरी सचाई से काम लेना चाहिए और कहना चाहिए कि

www.thearyasamaj.org

जब तुमने एक काम आरम्भ किया तो उसे आगे भी बढ़ाओं जिससे यथेष्ट फल की प्राप्ति कर सको।

संध्या करने के लाभ- यदि हम अपनी प्रवृत्तियों पर विचार करें तो उनकी दो गतियों का पता चलता है-अन्तर्मुखी प्रवृत्ति और बहिर्मुखी प्रवृत्ति। प्राय: हमारी बहिर्मुखी प्रवृति रहा करती है। हम क्या खाएं, क्या पिएं, किससे मिलें, कैसे धन कमाएं आदि-आदि बाहर की बातों की ओर ही सोचा करते हैं। दिन-रात में बहुत कम ऐसा होता है कि बाहरी बातों से हमको छुटकारा हो सके और हमारी प्रवृत्तियाँ अन्तर्मुखी हो सकें। कुछ लोग तो कभी भी नहीं सोचते। हाँ, जब हम सो जाते हैं और गहरी नींद आ जाती है तो हमारा कुछ देर के लिए बाहरी झंझटों से छुटकारा हो जाता है, परन्तु कभी-कभी हमको अपने विषय में भी सोचना चाहिए। जो सदा संसाद के विषयों में ही लिप्त रहता है वह रथ के उस स्वामी के समान है जो रथ को सजाने में ही लगा रहता है और स्वयं भूखा या नंगा रहता है।

हम अपनी प्रवृत्तियों के दो भाग कर सकते हैं-एक तो केन्द्रोन्मुखी प्रवृत्तियों (Centripetal Tendencies) और दूसरी केन्द्र-प्रतिमुखी प्रवृत्तियाँ (Centripetal Tendencies)। यदि हमारी समस्त वृत्तियाँ केन्द्र की ओर ही रहें तो संसार का काम नहीं चल सकता। हम खाना-कपड़ा आदि प्राप्त करने के लिए बाहर की वस्तुओं से नाता जोड़ते हैं। परन्तु ऐसा नित्य करते-करते हम अपने केन्द्र से दूर होते जाते हैं। इसको रोकने के लिए दूसरी प्रवृत्ति केन्द्रोमुखी (Centripetal) की आवश्यक होती है। याद रखना चाहिए कि किसी चक्र या वृत्त को बनाने के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है-एक केन्द्र (Centre) और दूसरा अर्द्धव्यास (Radius) यदि केन्द्र हो और अर्द्धव्यास न हो तो वृत्त बन ही नहीं सकता और यदि केन्द्र न हो और अर्द्धव्यास हो तो भी वृत्त का बनाना असम्भव है। केन्द्र स्थान को नियत करता है और अर्द्धव्यास परिमाण को। यदि केन्द्र नियत है तो जितना बड़ा अर्द्धव्यास होगा उतना ही बड़ा चक्र बनेगा, और यदि केन्द्र नहीं है तो चाहे छोटा अर्द्धव्यास हो चाहे बड़ा, स्थानाभाव के कारण वृत्त नहीं बन सकता। इसका मोटा उदाहरण खूँटे से ले सकते हैं। बैल को खूँटे से बांध दो। बैल खूँटे के चारों ओर फिरेगा। परन्तु कितनी दूर तक? जितनी बड़ी रस्सी है। रस्सी चक्र से परिणाम को नियत करेगी, खूँटा स्थान को। यदि खूँटा न हो तो बैल रस्सी को लेकर भाग जाएगा। हमारी आत्मा केन्द्र है और हमारी भावनाएँ अर्द्धव्यास हैं। केन्द्रोमुखी और केन्द्र प्रतिमुखे प्रवृत्तियों के समन्वय से ही लोक यात्रा चलती है। यदि इनके समन्वय में भेद पड़ जाय तो लोक यात्रा असम्भव है। यजुर्वेद में एक बहु त ही उपयोगी मन्त्र आया है।

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता स्थानाभाविवाराः। (यजुर्वेद 34/5) अर्थात् इस मन में ऋग्, यजु. सामवेद इस प्रकार लगे हैं जैसे रथ के पहिए की नाभि में अरे लगे रहते हैं। पहिए में एक नाभि होती है और दूसरी परिधि। नाभि और परिधि में सम्बन्ध स्थापित करके उसे दृढ़ करने का काम अरों का है। अरे नाभि को अपने स्थान पर रखते और परिधि को अपनी मात्रा से बढ़ने नहीं देते। यह उपमा बड़ी सुन्दर है। धर्म, धर्म-पुस्तक या ईश्वर-भक्ति का सबसे मुख्य काम अरों का है जो केन्द्र को परिधि की ओर और परिधि को केन्द्र की ओर खींचे रखते हैं। इससे आत्मा संसार के कामों में संलग्न होता हुआ भी अपने को नहीं भूलता। जिस प्रकार अरों के न होने से परिधि टूट जाती है और समस्त चक्र अस्त-व्यस्त हो जाता है, उसी प्रकार धर्म का विचार न होने से मनुष्य संसार में इतना लिप्त हो जाता है कि उसकी संसार-यात्रा भी सुखमय नहीं होती। संसार के सुख क्षणभंगुर होते हैं, उनमें उसी समय तक सुख है जब तक उनका सम्बन्ध हमारी आत्मा से है, जहाँ मर्यादा नष्ट हुई वहां सुख भी नष्ट हुआ और संसार भी बिगड़ गया।

संध्या मर्यादित करती है- संध्या करने का सबसे बड़ा फल यह है कि हम अपनी आत्मा और उसके भीतर व्यापक परमात्मा का चिन्तन करके अपने सांसारिक संबंध को मर्यादा में रखते हैं। दिन में दो बार सायं-प्रात: यह सोचना कि हम आत्मा हैं, चेतन हैं, जड़ नहीं है, जड़ जगत् से हमारा संबंध उतना ही है जितना हमारे लिए उपयोगी है, यह कुछ कम नहीं है। हमारा मन उस कबूतर के समान है जिसके पैर में धागा बँधा हुआ है। यह धागा उसे अपनी छतरी से नियत दूरी तक ही उड़ने देता है। ज्योंही वह सीमा पार हुई, धागा उसको छतरी की ओर खींच लेता है-''बस इससे आगे मत बढ़ो में विपत्ति है।''

बिना खूँटे के बैल न बनिए- बुद्धिहीन बैल

www.thearyasamaj.org

समझता है कि गले की रस्सी उसके लिए व्यर्थ का बन्धन है। वह उसको खूँटे से बहुत दूर नहीं जाने देती। परन्तु उसको ज्ञात नहीं कि स्वामी ने यह रस्सी समझ-बूझकर बांधी है। रस्सी तोड़कर खूँटे से भागना भयानक जंगल में भेड़ियों और व्याघ्रों का शिकार होना है। सुख उसी समय तक है जब तक रस्सी से बंधे हुए मर्यादा के भीतर चर रहे हो। ईशोपनिषद् में कहा है-

तेज त्यक्तेन भुञ्जीथाः। (यजुर्वेद-40/1)

त्याग-भाव से संसार को भोगो। संसार-यात्रा के लिए संसार की वस्तुओं को भोगना तो है ही, परन्तु क्या भोगते ही चले जाओगे? कितना भोगेगे? यदि यात्रा का उल्लंघन किया तो याद रखो कि संसार की वस्तुओं से सुख भाग जाएगा। संसार की हर एक वस्तु एक सीमा तक ही सुख देती है। उस सीमा को पार किया और दुःख आरंभ हुआ। अंगूर को मुँह में रखो, मीठा लगेगा। उसको दो घण्टे मुँह में रखे हो, मतली आने लगेगी। क्यों? इसलिए कि सीमा से बाहर चले गए। अंगूर मजेदार था। उसका मजा कौन चुरा ले गया? अंगूर तो तुम्हारे मुँह में है? उत्तर मिलेगा कि तुम्हारा सीमोल्लंघन ही मजे को उड़ाकर ले गया। अंगूर वही है। आपकी उच्छंखलता मजे की बाधक है। परमात्मा-चिन्तन हमको संसार में मर्यादा के बाहर विचरने से रोकता है। वह हमारी वृत्तियों को भीतर की ओर खींचता रहता है। यदि इस चिन्तन को सर्वथा त्याग दिया जाए तो हम बे-खूँटे के बैल हो जाते हैं। मन लगाकर और अर्थ समझकर संध्या करनेवाले व्यक्ति को नित्य यह सोचने का अवसर मिलता है कि मैं क्या हूँ? परमात्मा क्या है? मेरा संसार से कितना संबंध है? मुझे संसार की वस्तुओं को भोगने की कहाँ तक आज्ञा है और मेरा इसमें अपना कितना हित है?

एक और बात है। यह तो सब जानते हैं कि संसार की वस्तुओं में मजा है, सुख है, वे हमको अच्छी लगती है, परन्तु हमको यह ज्ञान नहीं कि वह मज कितनी सीमा तक है। लोग इसलिए दुःख नहीं उठाते कि वे वस्तुओं को भोगते हैं। वे इसलिए दुःख उठाते है। कि वे सीमा से अधिक वस्तुओं को भोगते हैं। शरीर-धारण के लिए भोजन की आवश्यकता है, परन्तु परिमित भोजन की।

आत्म-तत्त्व पर भी ध्यान दो- इससे आगे क्या है? रोग और मृत्यु। वही दूध, वही घी, वही मीठा जो शरीर को पुष्टि देते हैं, मात्रा से अधिक रोग के कारण हो जाते है। अतः इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हमको जड़ वस्तुओं की उपयोगिता की सीमा का परिज्ञान होता रहे और हम यह न भूल जाएँ कि हर एक खाने-पीने की वस्तु के मजे में हमारा चेतन भाग कितना है? ईश्वर का चिन्तन हमको नित्य यह याद दिलाता रहता है कि हर वस्तु के मजे में इतना भाग आत्मतत्व का है।

- गंगा ज्ञान सागर के साभार

भजन

जीवन के दिन चार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे।
श्वास-श्वास में प्रभु सिमर ले मन से ओ३म् उच्चार रे।
जीवन के दिन चार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे॥
बालक पन सब खेल गंवाया, यौवन में जवानी मद छाया।
वृद्धापन लाचार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे।
जीवन के दिन चार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे॥
भाई-बहन पुत्र और नारी, ये सब स्वास्थ्य के अधिकारी।
इन्हें मतलब का है करार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे।
जीवन के दिन चार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे॥
इज्जत, शोहरत, शानव चौधर सब जायेगा यहीं छोड़कर।
धन-दौलत बेकार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे॥
जीवन के दिन चार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे॥
माया-छाया दोनों एक सी, चका चौंध की क्यों है बेबसी।
मत कर जीवन को बेकार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे॥
जीवन के दिन चार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे॥
रामसुफल चित्र प्रभु से लगा ले, मानव जीवन सफल बनाले।
बिन भक्ति न भवपार रे साथी करले प्रभु से प्यार रे॥
जीवन के दिन चार रे साथी कर ले प्रभु से प्यार रे॥

- आचार्य रामसुफल शास्त्री हांसी, मो. 9416034759

www.thearyasamaj.org

यात्रा

- रास अल खेमा, यू.ए.ई.

समादरणीय श्री युत।

सादर नमस्ते

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

ध्यान, अध्यापन, शंका समाधान आदि के रूप में वैदिक धर्म प्रचारार्थ 21 जनवरी 2016 को दुबई पहुंचा। यह मेरी 26वीं प्रचार यात्रा है। देश-विदेश, जहां कहीं पर भी जाता हूँ, प्राय: सर्वत्र आर्य सज्जनों के द्वारा (विशेषकर युवक) एक प्रश्न प्रमुखता से उपस्थित किया जाता है कि सत्य, सनातन, ईश्वरीय-धर्म, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, आचार विचार एवं आदर्श परम्पराओं का समाज राष्ट्र विश्व में प्रचार-प्रसार क्यों नहीं हो रहा है? आज देश में हजारों की संख्या में आर्य समाजें है।, विद्यालय, गुरुकुल, आश्रम तथा अन्य संस्थान हैं, जिनमें यज्ञ, संध्या, सत्संग, स्वाध्याय, भजन, प्रवचन, कथा, शिविर, समारोह उत्सव, संगोष्ठी आदि सम्पन्न होते हैं, इन सबसे व्यक्तिगत, पारिवारिक लाभ तो अवश्य होते हैं, किन्तु समाज, राष्ट्र के अन्य (वैदिक धर्म से अपरिचित) व्यक्तियों को इनसे लाभ नहीं होता है या अतिन्यून होता है। हम आर्यो का सब कुछ श्रेष्ठ, महान, आदर्श होते हुवे भी हम बढ़ नहीं पा रहे हैं। लोग वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट नहीं हो पा रहे हैं। वैदिक धर्म सार्वभौमिक, सर्वकालीन, सर्वजनीन होते हुवे भी हम इसे फैला क्यों नहीं पा रहे हैं? शास्त्रकार ऋषियों ने लिखा है कि **''सत्य-मेव जयते नानृतम्''** किन्तु वर्तमान में तो स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि सत्य, असत्य से पराजित हो रहा है, श्रेष्ठ, निकृष्ट से दब रहा है, उत्तम घटिया से पिछड़ रहा है, आदर्श, अनादर्श से अभिभूल हो रहा है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के सिद्धान्त अब या तो पुस्तकों में ही शोभा दे रहे हैं या फिर मंच पर विद्वानों का प्रवचन का विषय रह गये हैं। सामान्य मनुष्यों की तो यह मानसिकता बन गयी है कि, बिना झूठ, छल, कपट, छल, अन्याय के तो जीवित रहना भी संभव नहीं है। समाज राष्ट्र में यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि छाली, कपटी, अन्यायी, शोषक, धूर्त चालाक, छली व्यक्ति बड़े ठाठ से, सुख सुविधा वाले साधनों के साथ गर्व के साथ जी रहे हैं और सत्यवादी, आदर्श, धर्मपरायण सज्जन लोगों को अनेक प्रकार के अभावों, अन्यायों, अत्याचारों, बाधाओं, कष्टों के कारण दु:खमय जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। इस स्थिति के कारण भी जन सामान्य में सत्य, धर्म, आदर्शों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो गई है।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हमारे पास ईश्वर, ज्ञान, सिद्धान्त, कर्म, उपासना, शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार आदि समस्त विषय का विज्ञान श्रेष्ठ होते हुवे भी इसके प्रचार-प्रसार में जिन साधनों, सुविध ाओं, बुद्धि, साहस बल पराक्रम त्याग, तप, लगन, सहनशक्ति, धैर्य, निष्कामता की नितान्त अपेक्षा है, उनका अभाव है, न्यूनता है। मात्र धनैश्वर्य-सुख सुविधाओं के विपुल तथा उत्कृष्ट हो जाने से कोई धनिक नहीं बन जाता, जब तक समाज राष्ट्र के विपन्न जन समुदाय के लिए उनका त्यागपूर्वक सदुपयोग न करे। बलिष्ठ, वीर्यवान् की संज्ञा, वही प्राप्त करने का अधिकारी है, जो मात्र शक्ति, सौष्ठव, बृहदाकार का आधिक्य ही न रखता हो, बल्कि अपने बल, साहस, पराक्रम, उत्साह, प्रगल्भता का प्रयोग, निर्बल, प्रताड़ित शोषित, अन्याय से ग्रस्त दु:खित व्यक्तियों की रक्षा के लिए करे। सच्चा विद्वान् वही है जो समाज राष्ट्र में प्रचलित अज्ञान, असत्य, पाखण्ड, अंध विश्वास को नष्ट करने के लिए साहस, निर्भीकता के साथ परमपुरुषार्थ करे, इस कार्य के करते हुवे मृत्यु भी आ जावे तो घबराये नहीं।

हमें यह बात अच्छी प्रकार से मन में रखनी चाहिए कि स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना केवल वहां जाकर व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन को श्रेष्ठ, उन्नत, बनाने के लिए नहीं की है बल्कि इसके माध्यम से न केवल राष्ट्र बल्कि समस्त विश्व को भी श्रेष्ठ बनाने के लिए की है। साप्ताहिक सत्संग के कार्य तो हम घर पर भी करते हैं, करने चाहिए। समाजों में तो आर्य सभासदों को समाज, राष्ट्र में से मांसाहार, मद्यपान, घूत, व्यभिचार, नास्तिकता, अंधविश्वास, पाखण्ड, रिश्वत, झूठ, छल, कपट, अन्याय, अत्याचार जैसी बुराइयों को कैसे निर्मूल किया जाये और इसके लिए कौन, कितना, किस प्रकार का तन-मन, धन-समय बुद्धि का पूर्ण, निष्ठा, श्रद्धा,

www.thearyasamaj.org

विश्वास, निष्कामतापूर्वक सहयोग करेगा यह सब मिल बैठ कर सुनिश्चित करना चाहिए। स्मरण रहे कि सत्य की धर्म की आदर्श की जीत स्वत: नहीं होती, बल्कि उसे पूर्ण संगठित होकर, योजनाबद्ध रूप से, पूर्ण पुरुषार्थ, घोर तपस्या, आत्मविश्वास तथा ईश्वर की सहायता से जिताया जाता है।

हे देवाधिदेव महादेव! हम वेदानुयायी, ऋषि भक्त, याज्ञिक, ध्यानी स्वाध्यायशील, आचार्य, प्रचारक, अधिकारी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी संन्यासी सभी आर्यो के समक्ष, ये अधर्मी, विधर्मी, कुधर्मी, दैत्य पिशाच, असुर, नास्तिक अपने आतंक से समाज, राष्ट्र, विश्व को नरकमय बनाये जा रहे हैं और हम हाथ पर हाथ रखे, मूक बन कर, मात्र मन मसोस कर, इनको निहार रहे हैं। कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। हे अन्तर्यामिन् दयानिधान। वेद ज्ञान को समग्र विश्व में प्रसारित प्रचारित करने हेतु हमें विपुल शक्ति, अदभ्य-साहस, अटूट-विश्वास, अचल, पराक्रम, उत्कृष्ट-उत्साह प्रदान करो, जिससे हम मात्र घर या समाज मंदिर में, यज्ञ-संध्या-स्वाध्याय-सत्संग-भजन तक ही सन्तुष्ट न रहें, बल्कि अत्यन्त साहसिक, विशिष्ट क्रान्तिकारी कार्यो का सुसम्पादक करें, यह उद्योग आपके सहाय के बिना असंभव है। हमें पूर्ण विश्वास व आशा है कि आप शीघ्र अवश्य ही हमारे में वीर्य-ओज-बल प्रदान करके, इन कार्यो के सम्पादन करने में हमें समर्थ बनायेंगे।

ज्ञानेश्वरार्य: वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ गुजरात

बेहाल और निहाल

- खुशहाल चन्द्र आर्य, गोविन्द आर्य एण्ड सन्स, १८० महात्मा गांधी रोड, कोलकत्ता

देश की जनता है बेहाल और नेता, मन्त्री हो रहे है निहाल।
व्यापारी, उद्योगपति है बेहाल, ओफिसर, इंस्पेक्टर हो रहे है निहाल।
गाड़ी के मुसाफिर है बेहाल, टिकट चैकर हो रहे हैं निहाल।
मध्यम वर्ग है नेहाल, निम्न, उच्च वर्ग हो रहा है निहाल॥
पशु-पक्षी है बेहाल, देवी, देवता हो रहे हैं निहाल।
गाय-बैल है बेहाल, कसाई, ट्रेक्टर हो रहे है निहाल॥
उपदेश, प्रवचन है बेहाल, सीनेमा, टी.वी. हो रहे हैं निहाल।
सन्ध्या, हवन, सत्संग है बेहाल, फाईव स्टार होटल हो रहे हैं निहाल।
साधु, संत, संन्यासी है बेहाल, खिलाड़ी अभिनेता हो रहे है निहाल।
भारतीय संस्कृति है बेहाल, पश्चिमी सभ्यता हो रही निहाल।
राष्ट्र भक्त, देश हितैषी है बेहाल, माफिया, अपराधी हो रहे हैं निहाल।
सच्चा, ईमानदार है बेहाल, झूठा, बेईमान हो रहा है निहाल।
स्वदेशी सामान है बेहाल, विदेशी कम्पनियां हो रही है निहाल।
विद्वान्, चरित्रवान है बेहाल, धूर्त, भ्रष्ट, गुण्डे हो रहे हैं निहाल॥
देश का संगठन है बेहाल, जातिवाद, प्रान्तवाद हो रहा है निहाल।
दया, धैर्य, शान्ति है बेहाल, आतंकवाद, घुसपैठ हो रहे है निहाल॥
इस देश का बहुसंख्यक है बेहाल, अल्प संख्यों की चल रही है विघ्वंसक चाल।
रोते हुए लिख रहा है 'खुशहाल', देश हितैषियों सभ्यतों और रखो देश का ख्याल॥
क्या खेल रहे हो होली, लगाकर गुलाल, लुट रहा है तुम्हारा 'गौरव' और माल।
जल्दी ही आने वाला है वह औरंगजेबी काल, यदि रहा कुछ वर्षो तक यही हाल॥
सम्भलों और चेतों मेरे हितैषी माही के लाल।
यदि चाहते हो जीना, तो रखो सदा देशहित का ख्याल।

www.thearyasamaj.org

हमारी तथा पश्चिमी संस्कृति का तुलनात्मक दृष्टिकोण

- खुशहाल चन्द्र आर्य, गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, १८० महात्मा गांधी रोड, कोलकत्ता

हमारी संस्कृति का आधार जहां संयम, सदाचार, उदारता, दया, करूणा, सरलता व त्याग है।
वहीं पश्चिमी संस्कृति का आधार काम, भोग, वासना, विलासता व नगन्ता के प्रति रखना अनुराग है।।
हमारी संस्कृति अमृत तुल्य दूध देने वाली गाय है, तो उनकी संस्कृति डंक मारने वाला काला नाग है।
हमारी संस्कृति मीठी बोलने वाली कोयल है, तो उनकी संस्कृति कर्कष बोलने वाला काला काग है।।
हमारी संस्कृति घी, खाण्ड, आटा का हलुवा है, तो उनकी संस्कृति नमक, मिर्च, खटाई का साग है।।
उनकी संस्कृति भीषण ग्रीष्म पड़ने वाली दोपहर है, तो हमारी संस्कृति मधुमास का महिना फाग है।
उनकी संस्कृति कांटो भरा जंगल है, तो हमारी संस्कृति गुलाब, चम्पा, चमेली के फूलों का बाग है।
हमारी संस्कृति जहां जीते जी लाती आनन्द का रस है, तो उनकी संस्कृति मृत्यु के बाद आने वाला भाग है।
उनकी संस्कृति प्रदूषण फैलाने वाली मोमबत्ती है, तो हमारी संस्कृति गऊ के घी से जलने वाला चिराग है।
हमारी संस्कृति जहां अमृत की घूंट है, तो उनकी संस्कृति शरीर को जलाने वाली भयंकर आग है।।
उनकी संस्कृति जहां विषय-भोगों में फंसाना सीखाती है, वही हमारी संस्कृति सिखाती करना ईश्वर से अनुराग है।
सर्वेभवन्तु सुखिन:' का पाठ पढ़ाती और सीखाती न करो किसी से ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और राग है।।
उनकी संस्कृति मन को दु:खी और अशान्त बनाती, तो हमारी संस्कृति बनाती सबको खुशी से बाग-बाग है।
हमारी संस्कृति परिश्रमी और चरित्र वान बनाती, उनकी संस्कृति पर लगा चरित्रहीनता का दाग है।।
पर दु:ख है हमारे भोले भाले वनवासी भाई-बहनों में लगी हुई धर्म परिवर्तन की भागम भाग है।
कारण उनकी गरीबी का लाभ उठाकर, देकर लोभ लालच बनारहे इन्हें इसाई, यह हमार दुर्भाग्य है।
अब हमें मिटाने होंगे उनके अभाव, देना होगा बराबर का सम्मान, इसके लिए करना पड़ेगा हमें त्याग है।
तब हमारे वनवासी भाईयों में जागेगा स्वाभिमान, नहीं बनेंगे विधर्मी, रखेंगे हिन्दू धर्म में ही अनुराग है।
सब हिन्दू भाई मिलकर करेंगे यह देश के उत्थान का काम, तब समझे उदय होगा, देश का सौभाग्य है।
तभी बढ़ेगी समृद्धि, बचेगी आस्मित बनेगा, देश पुन: विश्वगुरु तब गायेगा 'खुशहाल वही पुराना वैभव भरा राग।

ईश्वर तू महान है

ईश्वर तू महान है, सब का रखता ध्यान है। तेरा ही एक आसरा, सब सुखों की खान है।
पृथ्वी और आकाश बनाये, नदी और नाले खूब सजाये, सूरज चांद को चमकाए, जो देते हमको प्राण है।
ईश्वर तू महान है, सब का रखता ध्यान है। तेरा ही एक आसरा, सब सुखों की खान है।
पेड़ और पौधे उगाये तुमने, फल और फूल लगाये तुमने, मीठे रसों से सरसाये तुमने,
जो देते हमको जीवन दान है, ईश्वर तू महान है।
जंगल, पर्वत बनाये तुमने, जल और वायु बढ़ाये तुमने, चारो वेद रचाये तुमने,
जो देते हमको सच्चा ज्ञान है, ईश्वर तू महान है...।
सच्चे मन से ध्याया तुमको, तन और मन लगाया तुमको, हर वक्त हृदय में पाया तुमको,
'खुशहाल' बन किया अमृत-पान है, ईश्वर तू महान है, सबका रखता ध्यान है।
तेरा ही एक आसरा, सब सुखों की खान है।।

www.thearyasamaj.org

नर-नारी उसी की कृपा से उन्नति करते हैं

- आचार्य प्रियव्रत

तदूषुतेमहत्पृथुज्मन् नमः कविः काव्येना कृणोमि।
यत् सम्यञ्चावभियन्तावभि क्षा-मत्रा मही
रोधचक्रे वावृधेते॥5॥

अर्थ- (तत्) इसलिए (पृथुज्मन्) हे महान् गतिवाले और महान् पृथिवी लोकों के बनाने और चलानेवाले वरणीय प्रभो! (कविः) कवि मैं (काव्येन) काव्य द्वारा (ते) तुम्हारे लिए (उ) ही (सु) उत्तम रीति से (महत्) महान् (नमः) नमस्कार (कृणोमि) करता हूँ, (यत्) क्योंकि तुम्हारी कृपा से ही (सम्यञ्चौ) साथ मिलकर चलनेवाले (अभियन्तौ) एक दूसरे को ओर झुकनेवाले (रोधचक्रे) बाधाओं पर आक्रमण करनेवाले (मही) नर और नारी (अन्न) इस (क्षाम्) पृथिवी पर (अभिवावृधेते) सब ओर से वृद्धि करते हैं।

गतमन्त्रों में भगवान् की महिमा का वर्णन हो रहा था। उस महिमा को सुनते-सुनते और उसका चिन्तन करते-करते उपासक के हृदय में उस महामहिमाशाली प्रभु के लिए नमस्कार करते-करते उपासक के हृदय में उस महामहिमाशाली प्रभु के लिए नमस्कार की, उनकी महिमा के आगे नम्र होकर नतमस्तक हो जाने की भावना प्रबल हो उठती है। पूर्व मन्त्र में वर्णित महिमा के साथ प्रस्तुत मन्त्र में वर्णित उनकी महिमा भी उपासक को प्रभु के आगे नतमस्तक होने के लिए विवश करती है और उपासक के मुख से मन्त्र के पूर्वार्द्ध में वर्णित नमस्कार के भाव अनायास निकल पड़ते हैं। वह अपने प्रभु से कहता है कि हे भगवन्! मैं आपको खूब नमस्कार करता हूं और केवल आपको ही नमस्कार करता हूँ। आपसे भिन्न मेरे लिए और कोई उपासनीय नहीं है। मेरा नमस्कार स्वीकार कीजिए। मेरी भक्ति को ग्रहण कीजिए।

भक्त भगवान् से कहता है कि मैं कवि हूँ और काव्य द्वारा आपको नमस्कार करता हूँ। भक्त की इस भक्ति का मर्म समझ लेना चाहिए। कवि क्रान्तदर्शी को गहरे ज्ञानी को कहते हैं और कवि के कविपन को, उसके ज्ञान को काव्य कहते हैं। प्रभु के भक्त को ज्ञानी होना चाहिए। उसे प्रभु के गुणों और महिमा को पूरी तरह समझना चाहिए और फिर समझपूर्वक ही उसे प्रभु की भक्ति और उनके लिए नमस्कार करना चाहिए। उसके नमस्कार और उसकी भक्ति बिना-सोचे-समझे की जानेवाली तोतारटन्तमात्र नहीं होनी चाहिए। उसकी भक्ति गंभीर विचार और चिन्तन पर आश्रित होनी चाहिए।

इस कथन का एक भाव और भी हो सकता है। कवि कविता करनेवाले को भी कहते हैं और कवि की कविता को काव्य कहते हैं। इस अर्थ में मन्त्र के इस कथन का भाव यह होगा कि मैं कविताएं बना-बनाकर और गा-गाकर आपकी भक्ति और नमस्कार करता हू। गद्य की अपेक्षा पद्य में, कविता में भक्ति के भाव जाग्रत करने की और चित्त को एकाग्र करने की बहुत अधिक शक्ति होती है और जब कविता के साथ संगीत को मिला दिया जाए तो उसमें और भी अधिक रस पैदा होता है, इसलिए वेदमन्त्रों की रचना भगवान् ने छन्दोबद्ध कविता में कही है। वेद को इसलिए वेद में ही काव्य भी कहा गया है। हम प्रभु की उपासना वेदमय काव्य द्वारा और अपने नये काव्यों द्वारा दोनों ही प्रकार से कर सकते हैं।

मन्त्र के पूर्वार्द्ध में भगवान् का एक विशेषण ''पृथुज्मन्'' आया है। इस पद के दो अर्थ होते हैं। एक तो विस्तीर्ण गतिवाला, महान् गतिवाला और दूसरा महान् पृथिवी लोकों को बनाने और चलानेवाला। भगवान् दोनों ही दृष्टियों से पृथुज्मा हैं। भगवान की सर्वत्र गति है-वे सर्वव्यापक हैं, इसलिए भी वे पृथुज्मा हैं, फिर इन लोकों को बनाकर इन्हें चला भी भगवान ही रहे हैं। इन लोकों की जो बुद्धि को स्तब्ध कर देनेवाली विराट्गति है, वे भगवान ने ही इनमें प्रदान की हैं, इसलिए भी भगवान पृथुज्मा हैं।

मन्त्र के उत्तरार्द्ध में वरूण भगवान् की एक और महिमा का वर्णन किया गया है। कहा गया है कि इस धरती पर रहनेवाले नर-नारियों की सर्वतोमुखी वृद्धि उन प्रभु की कृपा से ही होती है। मन्त्र में नर और नारियों के लिए ''मही'' इस द्विवचनान्त शब्द का प्रयोग हुआ है। मही शब्द वेद में द्युलोक और पृथिवीलोक के लिए प्रयुक्त होता है, फिर वेद में द्युलोक केवल सूर्य और उस स्थान को ही नहीं कहते जहां तारे चमकते हैं और पृथिवी न केवल इस धरती को ही कहते हैं। वेद में द्युलोक का अर्थ पिता और पृथिवी का अर्थ माता भी होता है। पिता मनुष्य जाति के

www.thearyasamaj.org

नर-समुदाय का और माता नारी समुदाय का प्रतिनिधि है। इस प्रकार वेद में द्यावापृथिवी माता-पिता के और सामान्यन नर और नारी के अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं। हमने यहाँ द्यावापृथिवी के वाचक ''मही'' शब्द के प्रसिद्ध अर्थ सूर्य और पृथिवी की ''मन्त्रार्थ'' में संगति न हो सकने के कारण उसका दूसरा अर्थ नर और नारी कर लिया है। अर्थ अधिक संगत, चमत्कारपूर्ण और शिक्षाप्रद है।

धरती पर रहनेवाले जनसमाज के नर और नारी ये दो अंग है। दोनों मिलकर ही समाज की रचना करते हैं। दोनों में से किसी एक के अभाव में न समाज बन सकता है और न चल सकता है। समाज की दृष्टि से दोनों की बराबर महिमा है। नर और नारी के योग से बननेवाला मनुष्य समाज भगवान् की कृपा से ही इस धरती पर सब प्रकार की वृद्धि और उन्नति कर सकता है। उन्नति करने के लिए आवश्यक स्वस्थ शरीर और उत्तम मस्तक आदि हमारे अपने कहे जानेवाले पदार्थ तथा सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाश और गरमी, वायु, अग्नि, बिजली और भूमि आदि तत्त्व और भूमि में से निकलनेवाले लोहा, सोना, चांदी और तेल आदि पदार्थ तथा भूमि पर पैदा होनेवाले भांति-भांति के भोज्य पदार्थ-ये सब उस प्रभु की कृपा ही से तो हमें मिलते हैं। जब तक भगवान् चाहते हैं तभी तक हम इनका उपयोग ले सकते हैं। स्वयं हमारा जीवन भी तो प्रभु की कृपा से ही हमें मिला है। जब भगवान् नहीं चाहते तब एक क्षण भी तो हम अपने जीवन को संभाल कर नहीं रख सकते। भगवान् की इच्छा न रहने पर हमें सब कुछ छोड़ देना पड़ता है। हमारी जो कुछ वृद्धि और उन्नति हो रही है उसकी तह में महामहिमाशाली भगवान् की कृपा ही काम कर रही है।

मन्त्र में नर और नारी के लिए तीन विशेषणों का प्रयोग हुआ है। इनसे वृद्धि और उन्नति के लिए आवश्यक तीन महत्त्वपूर्ण बातों पर बड़ा सुन्दर प्रकार पड़ता है। पहला विशेषण है ''**समञ्चौ**''। इसका अर्थ होता है मिलकर चलनेवाले। जिस समाज के नर और नारी मिलकर चलेंगे, परस्पर लड़ें और झगड़ेंगे नहीं, एक-दूसरे को पिछड़ने नहीं देंगे, वही समाज उन्नति कर सकेगा। दूसरा विशेषण है ''**अभियन्तौ**''। इसका अर्थ होता है एक-दूसरे की ओर जानेवाले, एक-दूसरे की और झुकनेवाले, एक-दूसरे की ओर खिंचनेवाले-एक-दूसरे से प्रेम करनेवाले। जिस समाज के नर-नारियों में परस्पर खिंचाव और प्रेम रहेगा, प्रेम के कारण जिस समाज के नर-नारी एक-दूसरे को अपना अंग समझते हुए पारस्परिक उन्नति के लिए यत्नशील रहेंगे वही समाज वास्तव में उन्नति कर सकेगा। जिस समाज में पुरुषों को केवल पुरुषों की और स्त्रियों को केवल स्त्रियों की उन्नति की चिन्ता रहेगी वह समाज उन्नति नहीं कर सकेगा। दोनों को दोनों की उन्नति से प्रेम रहना चाहिए। दोनों का दोनों के भले की ओर झुकाव रहना चाहिए। तीसरा विशेषण है ''रोधचक्रे।'' रोध' का अर्थ होता है रूकावट, बाधा और 'चक्र' का अर्थ होता है-आक्रमण करनेवाला। जो रूकावटों और बाधाओं पर आक्रमण करके उन्हें दूर करते रहें, उन्हें विनष्ट करते रहें, वे नर और नारी रोधचक्र कहलाएंगे। उन्नति के लिए नर-नारियों में इस गुण का रहना नितान्त आवश्यक है। जो लोग रूकावटों से, विघ्न-बाधाओं से घबरा जाते हैं, उनका मुकाबला नहीं कर सकते और इसीलिए हाथ में लिये कामों को छोड़ बैठते हैं, वे कभी उन्नति नहीं कर सकते। हमें विघ्न-बाधाओं से घबराना नहीं चाहिए। हमें डटकर उनका सामना करना चाहिए। उन्हें अपने मार्ग से दूर करने के लिए कमर कसकर खड़े हो जाना चाहिए। बाधाओं से लड़ने की यह शक्ति जिन नर-नारियों के हृदयों में रहेगी वे अपनी सर्वतोमुखी उन्नति कर सकेंगे। विरोध से डरनेवाले, हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे रहनेवाले निरूद्यमी लोग कभी कोई उन्नति नहीं कर सकते। सफलता का सेहरा ''रोधचक्र'' वृत्तिवाले नरसिंहों के सिर पर ही बंधा करता है।

भगवान् की कृपा से मिलनेवाले वृद्धि और उन्नति के सहायक पदार्थो से किसी समाज के नरनारी तभी लाभ ले सकेंगे जब उनमें अन्याय गुणों के साथ इन विशेषणों में वर्णित ये तीनों बातों भी होगीं।

हे मेरे आत्मन्! तू भी प्रतिदिन प्रभु की महिमा और कृपा का स्मरण किया कर और उनके चरणों में अपने को नतमस्तक करता रहा कर।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

www.thearyasamaj.org

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
69. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
70. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
71. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
72. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

www.thearyasamaj.org

कमर दर्द में करें ताड़ासन

यदि कमर दर्द हो तो उसमें योग के अभ्यास बड़े कारगर होते हैं। इसमें सबसे पहला अभ्यास है ताड़ासन। ताड़ एक वृक्ष का नाम है। जब हम अपने शरीर की आकृति ताड़ के समान सीधी लम्बी व खिंची हुए बनाते हैं, तब उस अवस्था को ताड़ासन कहते हैं।

विधि: जमीन पर सीधे खड़े होकर एडी व पंजों को आपस में मिला लें व हाथों को छाती के सामने लाकर उंगुलियों को आपस में फंसा लें। हथेलियों को पलटें व हाथों को सीधाकर सांस भरते हुए हाथों को आकाश की ओर उठा लें। यहां कोहनियां सीधी रखें। अब शरीर का संतुलन पैरों के पंजों पर लाते हुए एड़ियों को ऊपर की ओर उठा दें और पूरे शरीर को अधिक से अधिक ऊपर की ओर खींच कर रखें। यहां सांस की गति सामान्य रहेगीं चेहरे पर प्रसन्नता रखते हुए यथाशक्ति रूके फिर सांस निकालते हुए वापस आ जाएं। इसका अभ्यास दो बार कर लें।

सावधानियां- यदि कमर दर्द के कारण एड़िया उठाने में असुविध लगे या पंजों पर संतुलन न बना पाएं तो बिना एड़िया उठाए ही शरीर को ऊपर की ओर खींचे।

लाभ: ताड़ासन से रीढ़ की हड्डी पर ऊपर की ओर खिंचाव पड़ने से कमर की मांसपेशियों व कशेरूकायों के स्वास्थ में वृद्धि होने लगती है व कमर में आई जकड़न दूर होती है। यह आसन कमर पर एक प्राकृतिक खिंचाव डालकर डालकर उसकी तान को सुधारने में मदद करता है जिससे कमर दर्द, स्लिम डिस्क व साईटिका दर्द में आराम पहुंचता है। आफिस में या कहीं भी लगाता बैठने पर यदि कमर में दर्द लगे तो इस आसन को उसी समय किया जा सकता हैं, इसके करते ही कमर में आराम मिलेगा। नर्वस सिस्टम को बल देने वाला यह आसन गर्दन दर्द, कंधे की जकड़न, गठिया व जोड़ो के दर्दो में भी आराम पहुंचाता है। यह गुरुत्वाकर्षण के विपरीत शरीर की मांसपेशियों में खिंचाव लाकर उनमें लचीलापन बढ़ाता है। कमर दर्द के अलावा अस्थमा, सांस फुलना आदि कफ रोगों को दूर करने में सहायत हैं। इससे वंक्षस्थल व हृदय की मांसपेशियों में लचीलापन आता हैं। शरीर का आलस्य, थकान, भारीपन व जकड़न दूर का यह तरोताजगी व हल्कापन देने वाला है इससे पूरे शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। बच्चों की लम्बाई बढ़ने में भी यह आसन बड़ा लाभकारी है।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की
हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

www.thearyasamaj.org

पहचाना जिसने माता-पिता को

- ऋषि राम कुमार, 112, सैक्टर 5, पार्ट-3 गुड़गांव (हरियाणा), मो. 9968460312

माता-पिता की सेवा कर लो, वही जग में नाम कमायेगा,
बाकी जो आया है जग में, खाली हाथ ही जायेगा,
माता-पिता के आशीर्वाद से सब कुछ तुम्हें मिल जायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता को, वही जीवन सुख पायेगा।
तुम्हें बड़ा करने के लिए वो अपने आपको भूल गये,
कितनी खुशी मिली थी उनको, जब तुम पढ़ने स्कूल गये,
तुम्हें सुख देने के लिए वो अपना दुःख भी भूल गये,
संसार के चक्कर में मत पड़ना, संसार तुम्हें भरमायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता को
कर्म करो जीवन में तुम-कर्म ही सबसे महान है,
सबका भला जो सोचेगा, वही सच्चा इंसान है,
फंस जाता जो मोह माया में, वो बन्दा नादान है
भूल गया जो माता-पिता को जीवन में दुःख पायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता का
झूठ फरेब के धन्धों से तुम्हें दूर रहना होगा,
चालबाज इस दुनिया से, सावधान रहना होगा,
सुख-दुःख से घबराना नहीं, सब कुछ तुम्हें सहना होगा,
जाना तुझको खाली हाथ, कुछ साथ नहीं जायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता का
बुरा न सोचो बुरा न देखो बुरा न करना कभी भी तुम,
झूठ से तुम दूर ही रहना, सच्चाई न छोड़ना कभी भी तुम,
छोटे-बड़े का फर्क न करना, यही जीवन की सच्चाई है,
मानव धर्म का पहन ले चोला, सब कुछ तू पा जायेगा,
पहचाना जिसने माता-पिता को वही जीवन सुख पायेगा।

आत्म शुद्धि-पथ (मासिक) सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान : बहादुरगढ़
2. प्रकाशन अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : स्वामी धर्ममुनि
4. क्या भारत का नागरिक है? : हाँ
5. मुद्रक का पता : आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
6. प्रकाशक का नाम : स्वामी धर्ममुनि
7. क्या भारत का नागरिक है? : हाँ
8. प्रकाशक का पता : आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
9. सम्पादक का नाम : स्वामी धर्ममुनि

   क्या भारत का नागरिक है? : हाँ

   सम्पादक का पता, : आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507

   उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों :

मैं स्वामी धर्ममुनि एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 15.3.2017 — स्वामी धर्ममुनि (प्रकाशक)

www.thearyasamaj.org

दो वेद-मन्त्र युवाओं के लिए

- अभिमन्यु कुमार खुल्लर

1. ओ३म। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।

2. ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

प्रथम मन्त्र महर्षि का सर्वाधिक प्रिय मन्त्र है। वेद भाष्य में अनेक बार इस मन्त्र का उल्लेख किया है। दूसरे मन्त्र को चारों वेद के बीस हजार से भी अधिक मन्त्रों में प्रमुख स्थान दिया जाता है। इसे गायत्री मन्त्र, गुरुमन्त्र और महामन्त्र भी कहा जाता है।

यह लेख न तो विद्वानों को और न ही वृद्धजन को दृष्टिगत रखकर लिखा गया है। प्रथम मन्त्र में आए 'दुरितानि' शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द ने दुर्गण, दुर्व्यसन और दुःख बताया है। दुर्गण और दुर्व्यसन के पराभाव की प्रार्थना युवावस्था में ही की जानी चाहिए। वृद्धावस्था में इनके दूर करने की प्रार्थना कोई अर्थ नहीं रखती। दुःख से मुक्ति की प्रार्थना किसी भी आयु में की जा सकती है। दूसरे मन्त्र में बताया गया है कि कौन इन दुरितों को दूर करने की सामर्थ्य रखता है? वह कौन है और उसकी सामर्थ्य कैसी है?

प्रथम मन्त्र का सरल भाषा में अर्थ है-हे देव! हे सविता। आप हमारे दुरितो-दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर कीजिए और जो भी अच्छे गुण, कर्म और स्वभाव है, उन्हें प्राप्त कराईये।

दूसरे मन्त्र का अर्थ है-हे प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता और व्यापक आनन्द के देने वाले प्रभु! आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं। हम आपके उस पूजनीय पाप विनाशक तेज (भर्ग) का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता! आपसे हमारी बुद्धि कदापि, विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों को सदैव सत्कर्मो में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

महर्षि दयानन्द गायत्री मन्त्र का प्रतिदिन एक हजार बार अर्थ सहित जाप करने का उपदेश करते थे। आशय यही होगा कि यह मन्त्र व्यक्ति के दिलो-दिमाग पर छा जाए, स्थायी रूप से स्मृतिपटल पर अंकित हो जावे और जब भी मनुष्य दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख में फंसे अथवा जीवन के झंझावतों में अध्ययनकाल से लेकर कार्यक्षेत्र में उतरने पर भी यदि कोई संकट आवे, तो परमात्मा उसकी रक्षा करें।

दोनों मन्त्रों में ईश्वर की पहचान बताई गई है। ओ३म् उसका निज नाम है। इस नाम में उसका स्वरूप और उसकी तीनों शक्तियों सृष्टि निर्माण, पालन और प्रलय का समावेश है। देव-सब सुखों का देने वाला। सविता-सब जगत का उत्पत्तिकर्ता और सब ऐश्वर्यो का दाता। **भूः**-सब चेतन जगत के जीवन का आधार अर्थात् प्राण। **भुवः** सब दुःखों से रहित व इनसे बचाने वाला है। **स्वः** सब जगत् को व्यापक होकर धारण करने वाला अर्थात् नियमों में बाँध रखने वाला। ऐसा ईश्वर ही 'वरेण्यं-वरण करने अर्थात् 'मानने' योग्य है और उसी से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें बुरे मार्ग से छुड़ाकर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा (प्रचोदयात्) दे।

उपरोक्त गुणों-शक्तियों से सम्पृक्त ईश्वर ने 'आत्मा' को मानव शरीर दिया है। इस शरीर को छैः तत्वों-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद (नशा-अहंकार) और मत्सर (ईर्ष्या-द्वेष) से संजोया है। प्रत्येक मानव में इनका भिन्न अनुपात उसके स्वतन्त्र-पृथक अस्तित्व को दर्शाता है। मानवीय क्रिया को गति देने वाली शक्ति- Creative/moving force ये ही तत्व हैं। यह भी यथार्थ है कि समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख के भी ये ही तत्व कारण हैं। इसीलिए शास्त्रकार इन्हें छैः शत्रु मानते हैं, क्योंकि ये ही तत्व उसे श्रेय मार्ग से हटाकर, प्रेय मार्ग में ही उलझाए रखते हैं। श्रेय मार्ग आत्मा की मोक्ष प्राप्ति का मार्ग। प्रेय मार्ग सांसारिक क्रिया-कलापों में विचरने का मार्ग।

ईश्वर काम कैसे करता है? बुद्धियों-ब्रेन पॉवर-मस्तिष्क की शक्तियों को बढ़ाकर, विवेक देकर-सही गलत की पहचान बताकर। इस विवेक को प्राप्त करके भी यदि मानव त्रुटि करता है, पाप करता है तो वह उसके मस्तिष्क में, गलत काम न करने के लिए भय-डर पैदा करता है। काम करना चाहिए या नहीं करना चाहिए की शंका पैदा करता है। यदि इन दोनों चेतावनियों की भी वह अनसुनी करता है तो निषिद्ध कर्म करने के पश्चात् दुष्परिणामस्वरूप प्राप्त लज्जा (शर्म) से भी अवगत कराता है।

कुछ प्रमुख दुगुर्णो, दुर्व्यसनों, दुःखों का संक्षितप्त विवरण विषय को स्पष्ट करने के लिए लिये आवश्यक है:

भ्रष्टाचार मानव जीवन का सर्वभक्षी दुर्गुण बन गया है। जीवन के सभी क्षेत्रों में यह घुन की तरह घुस

www.thearyasamaj.org

गया है। मुख्यमन्त्री, उच्चतम प्रशासनिक पद पर आसीन अधिकारी, सेवाधिकारी, न्यायधीश बड़े-बड़े उद्यमी, धन्नासेठ व्यापारी इस दुर्गुण में लिप्त पाये जाने पर जेल की यातना, सामाजिक प्रतिष्ठा खोने पर लज्जित जीवन झेल चुके हैं या झेल रहे हैं।

अभी हाल ही में दो प्रकरण सामने आये हैं। डी.जी. पद पर पदस्थ वरिष्ठतम् आई.एस.एस अधिकारी बी.के. बंसल, नौ लाख रूपये की रिश्वत लेते हुए, सी.बी.आई, द्वारा गिरफतार किये गये। आसन्न अपमान, मानसिक पीड़ा से बचने के लिए पहले पत्नि और पुत्री ने आत्महत्या की। कड़ी पूछताछ के कारण, बचने की आशा न देख पिता और पुत्र ने भी आत्महत्या कर ली। दिल्ली की एक महिला सीनियर जज चार लाख की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ी गई।

दुर्व्यसनों में सिरमौर हैं-शराब, मादक पदार्थ-चरस, हशीश और ड्रग्स का सेवन। उन्मुक्त कामवासना की अनाधिकृत तृप्ति व्यभिचार है। वेश्यागमन पहिले से ही अस्तित्व में है और अब रात-रात भर चलने वाली रेव पार्टियों, डॉस-बारों में यही सब कुछ तो होता है। शराब और शवाब के भीषण दुष्परिणामों से बचाने के लिए परमात्मा की चेतावानियाँ भय, शंका और लज्जा ही काम कर सकती हैं। स्थाई समाधान दे सकती हैं। मानवीय दण्ड विधान विवेक जागृत नहीं करता और नहीं हृदय परिवर्तन करता है। फिर भी देखा यह जाता है कि इन व्यसनों में ग्रस्त अधिकांश लोग, मानवीय कमजोरियों के चलते, घुटने टेक देते हैं। दु:ख के कारण और प्रकार की सूची अंतहीन है और इनसे प्राप्त पीड़ा भी अकल्पनीय और सीमातीत है। इनमें एक प्रमुख कारण पूर्व जन्मों के संचित कुकर्म हैं।

लेख की सीमा और उद्देश्य का ध्यान रखने के कारण यदि प्राकृतिक आपदाओं से प्राप्त दु:खों एवं व्यक्तिगत शारीरिक और मानसिक रोगजनित पीड़ा का विचार करना छोड़ दें तो क्रियात्मक रूप में दु:ख देने वाले और दु:ख झेलने वाले दोनों ही मनुष्य हैं। पूर्व वर्णित छै: में से एक अथवा अधिक शत्रुओं से ग्रसित मनुष्य ही दु:ख का कारण बनता है।

दु:खों का निवारण और कामनाओं की पूर्ति ईश्वर करता है पर कब? महर्षि दयानन्द के अनुसार जब पूर्ण पुरुषार्थ-पूरी मेहनत और लगन के साथ प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिले तब। दु:ख/कष्ट/संकट निवारण का ईश्वरीय तरीका भी अद्भुत होता है। किसी भी रूप में अप्रत्याशित सहायता देकर, विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाकर, धैर्य से उनका सामना करने का आत्मिक बल देकर।

आज का युवा वर्ग बेरोजगारी के कारण अत्याधिक पीड़ादायक मानसिक यंत्रणा झेल रहा है। उसकी जिन्दगी 'भटकाव' की त्रासदी बन गई है। यह 'भटकाव' बड़ी आसानी से उसे शराब, ड्रग्स सेवन एवं अपराध आदि के दुर्व्यसनों में ढकेल रहा है। ऐसी स्थिति में परिवर के अतिरिक्त उसे सच्चा मार्गदर्शक, विश्वसनीय हितैषी मित्र चाहिए जो 24 घण्टे उपलब्ध हो। इन मानदण्डों पर 100 प्रतिशत खरा उतरने वाला परमात्मा ही हो सकता है, अन्य कोई नहीं।

इसीलिए इस लेख में निराकार, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अत्यंत संक्षित परिचय और उसकी अपार क्षमताओं से युवावर्ग का परिचय कराने का प्रयास किया है, जिससे वे उसे ही सर्वोच्च हितैषी मित्र मानकर पूर्ण आस्थावान और विश्वासी बनें। मुझे बड़ी हार्दिक प्रसन्नता है कि डी.ए.वी. संस्थाएं एवं गुरुकुल इसी विचारधारा के युवावर्ग का निर्माण कर रहे हैं।

हंसो और हंसाओ

1 पहली मक्खी गंजे के सर पर बैठी थी
दूसरी मक्खी ने कहा-वाह क्या घर मिला है।
पहली मक्खी-नहीं रे अभी तो सिर्फ प्लाट खरीदा है।

2 लड़का लड़की के पिता से-मुझे आपकी छोरी का हाथ चाहिए।
लड़की का पिता-गधे! हम क्या यहाँ लड़कियों के स्पेयर पार्टस बेचते हैं।

3 बच्चा-अंकल डेटॉल साबुन है क्या-दुकानदार (नाक से उगली निकालते हुए) हाँ बेटा है ना।
बच्चा-तो फिर उससे हाथ धोकर क्रीमरोल दे दो।

4 एक बार दो चुहे दंड बैठक मार रहे थे हाथी आया और बोला-यार मुझे भी दंड बैठक मारना सिखा दो ना
चुहे-तू रहने दे तेरी पिन्डी सुज जायेगी।

- रवि शास्त्री आत्मशुद्धि आश्रम

www.thearyasamaj.org

अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव

- अर्जुनदेव चड्डा

आधुनिक ज्ञान विज्ञान के युग में कभी-कभी ऐसी घटनाएं हो जाती हैं जो कि व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि वह किस युग में जी रहा है। यह घटना राजस्थान के कोटा शहर की है जहां 2012 में भीलवाड़ा से ईलाज के लिए कोटा लाते समय एक महिला का कोटा में निधन हो गया। निधन के एक वर्ष पश्चात पूरा परिजनों के साथ बस भर कर कोटा आया और महिला की कोटा में जिस स्थान पर मृत्यु हुई वहां कुछ टोने-टोटके करने लगे। लोगों ने पूछा तो उन्होंने बताया कि उनको किसी पण्डित ने कहा है कि घर में जो परेशानियां चल रही हैं उसका कारण मृतका की आत्मा का भटकना है, इसलिए भटकती हुई आत्मा को साथ लेने आए हैं।

यह तो एक उदाहरण मात्र है ऐसी अनेकों घटनाएं, तथ्य विज्ञान और दर्शनशास्त्र के तर्को से परे प्रतिदिन समाज में देखने तथा सुनने को मिलती हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी मानव अंधविश्वासों के घोर अंधेरे में फंसा पड़ा है। आज भी कुछ स्वार्थी पाखण्डियों द्वारा फैलाये जा रहे मिथ्या प्रचार के कारण शिक्षित होते हुए भी लकीर का फकीर बना हुआ है जबकि धार्मिक ग्रंथ किसी भी प्रकार के टोने-टोटके तथा अंधविश्वास का समर्थन नहीं करते हैं।

वशीकरण, तांत्रिक क्रियाएं, गंडे ताबीज, भूत-प्रेत की कपोल कल्पना, धातु प्लास्टिक से बने यंत्र न जाने अंधविश्वास किन-किन रूप में लोगों के मन में घर किये हुए है। कुछ चालाक व्यक्ति मानव मन में व्याप्त इसी भय नामक कमजोरी का फायदा उठाकर कभी नारियल को मन्त्र से फोड़कर दिखाना, नींबू में खून दिखाना, सफेद सरसों के दानों को काला करना, रंगीन फूलों को रंगहीन कर देना, भभूत प्रकट कर खिलाना, बिना किसी साधन के जल छिड़क कर दीपक जलाना, आत्माओं से बातें करना जैसे माध्यमों से लोगों को भयभीत कर अपना उल्लू सीधा करते नजर आते हैं।

सबसे बड़ी बात है कि यह सब होता है धर्म के नाम पर। धर्म की आड़ में फूल-फल रहे इस अंधविश्वास के धंधे में कितने ही लोग अपनी जीवन भर की कमाई डुबाते नजर आते हैं और अंत में मिलता है उन्हें सिर्फ धोखा तथा शारिरिक, मानसिक यंत्रणा। जिन शारीरिक व मानसिक परेशानियों से बचने के लिए वे तन्त्र-मन्त्र के इस मार्ग को चुनते हैं, अंत में स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते हुए लुटे-पिटे तथा हताश दिखाई पड़ते हैं और कई बार स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि व्यक्ति को आत्महत्या तक करनी पड़ती है।

इन अंधविश्वासी अनुष्ठानों की मार का सामना सर्वाधिक महिलाओं को करना पड़ता है। कभी भूत-प्रेत, चुड़ैल तथा डायन न जाने कितने रूपों में उन्हें प्रताड़ित होना पड़ता है। यहां तक अनुष्ठानों की आड़ में शारीरिक शोषण का भी सामना करना पड़ता है।

सत्यता तो यह है कि इन सभी अंधविश्वासी कर्मकाण्डों का कोई भी धार्मिक कारण नहीं है। वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि धर्मशास्त्रों में इनका कोई उल्लेख ही नहीं है। केवल मानव मन में व्याप्त भय तथा सांसारिक कारणों से जीवन में आने वाली कठिनाईयों का फायदा उठा कर कुछ लोगों ने मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण का एक तंत्र विकसित कर लिया है जिसे चालाकी से धार्मिक रूप दे दिया गया है।

वेद, उपनिषदों तथा दर्शन में किसी भी रूप में आत्माओं के भटकने, उनसे वार्तालाप करने आदि का कोई भी उल्लेख नहीं है। किन्तु इन ग्रंथों के ज्ञान से अज्ञान व्यक्ति केवल धार्मिक अंधविश्वास के नाम पर लुटता चला जाता है।

गीता में स्पष्ट लिखा है कि जैसे व्यक्ति पुराने कपड़े बदलकर नये कपड़े पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर ईश्वर की व्यवस्था अनुरूप नये शरीर को धारण करती है। आधुनिक विज्ञान भी इसी बात का समर्थक है।

वास्तव में अंधविश्वास के इस धंधे से रोजी रोटी कमाने वाले इन चालाक लोगों ने विज्ञान को ही अपना माध्यम बनाया हुआ है। विज्ञान की रासायनिक क्रियाओं, विधियों का प्रयोग कर ये लोग चमत्कार आदि दिखाकर

www.thearyasamaj.org

लोगों के मन में अपनी पैंठ जमा लेते हैं और बाद में ऐसे लोगों का शोषण करते हैं। उदाहरण के रूप में परमैगनेट ऑफ पोटास को ग्लिसरीन पर गिरा कर आग प्रकट करना, कटहल के दूध लगे चाकू से नींबू काटने पर खून टपकना दिखाना, नौसादर तथा चूने के मिश्रण को सूंघा कर बेहोशी दूर करना तथा बिच्छू के डंक का उपचार करना। फिटकरी के घोल से पहले लिखना जो दिखाई न दे फिर बाद में उस पर चुकन्दर के रस को प्रयोग कर उसे दिखाना जैसे अनेकों प्रकार के तन्त्र-मन्त्र, जादू टोने-टोटके के पीछे विज्ञान तथा उसकी विधियां छुपी हुई हैं न कि कोई रहस्यमयी शक्ति।

इसलिए सर्वप्रथम तो मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार में दुख-तकलीफ आने पर उसके कारणों को खोज कर निवारण करे। धार्मिक अंध विश्वास से बचे, वेद उपनिषद् आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। जिससे धर्म का सत्य ज्ञान हो सके तथा यदि कोई चालाक तंत्र मंत्र के नाम पर भोले भाले लोगों को ठग रहा हो तो विज्ञान के माध्यम से बेनकाब करे। क्योंकि वेद कहते हैं **''अंधन्तम प्रविशन्ति ये अविद्याम् उपासते''** जो अविद्या में घिरे रहते हैं वे ही अंधविश्वास रूपी अंधकार में गिरते हैं इसलिए ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का निवारण करे न की तंत्र-मंत्र तथा पाखण्ड से।

स्मरण रहे कि लगभग आठ माह पूर्व भी कोटा के महाराव भीमसिंह अस्पताल में इसी प्रकार के पाखण्ड का पूरा नाटक किया और ढोंगियों ने आत्मा को पकड़ने का दावा किया। आर्य समाज की जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने तब और अब हुए इन अंधविश्वासों को समाचार पत्रों में पढ़ा तो उसी 6 समय कोटा कलेक्टर को फोन कर ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो का आग्रह किया।

व्यस्त यातायात को रोककर पाखण्डी पाखण्ड करते रहे और आमजन परेशान होता रहा और प्रशासन सोता रहा। शासन-प्रशासन-पुलिस को इस प्रकार के आडम्बरों को तुरन्त रोकने के आदेश जारी करने का निवेदन किया। - जिलाप्रधान आर्य समाज जिला सभा-4-प-28, विज्ञाननगर, कोटा 324005 (राज.) मो. 09414187428

दुनियां का बादशाह

सिकन्दर बादशाह का नाम सब जानते हैं। एक बार की बात है वह कही से लौट रहा था। देखता क्या है कि एक पेड़ के नीचे एक फकीर मस्ती में गा रहा है। उसकी मस्ती देखकर सिकन्दर ने पूछा, ''तुम कौन हो?'' फीकर ने जवाब दिया, ''मैं दुनिया' का बादशाह हूँ। यह सुनकर सिकन्दर को बड़ा अचरज हुआ। मन ही मन बोला' अरे बादशाह तो मैं हूँ। लाखों रूपया खर्च करता हूँ, इतनी बड़ी फौज रखता हूँ, कसकर मेहनत करता हूँ। यह फकीर दुनियां का बादशाह कहां से हो गया। उसने फकीर से पूछा ''क्यों भई, तुमने ऐसा क्या किया है, जो दुनियां के बादशाह बन गये?''

फकीर जोर से हंस पड़ा। बोला, ''तुमने सुना नहीं- ''मन जीते जग जीते। ''जिसने मन को जीत लिया, उसने दुनियां को फतह कर लिया।''

इतना कह कर उसने फिर मस्ती में तान छेड़ दी।

- सत्यानन्द आर्य

आर्य समाज धनौरा टीकरी का 41वाँ स्थापना समारोह सम्पन्न

आर्य समाज धनौरा टीकरी जिला-बागपत उत्तर प्रदेश का 41वां स्थापना समारोह अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। 24, 25 26 त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी मुख्यधिष्ठाता आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ हरियाणा के ब्रह्मत्व में सामवेद से यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री स्वामी जी द्वारा मध्य-मध्य में वेद मन्त्रों की सरल व्याख्या की गई। वेद पाठ आश्रम के ब्रह्मचारी विक्रम देव शास्त्री एवं रवि शास्त्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. धीरज कुमार इमाला, स्वामी सत्यदेव शुक्रताल, डॉ. चन्द्रवीर राणा (वैज्ञानिक पर्यावरण विद हरियाणा) श्री ओमकार सिंह, (प्रदेश अध्यक्ष खेत किसान मजदूर कांग्रेस पार्टी) आदि विद्वान वक्ताओं के व्याख्यान प्रवचन होते रहे। श्री अशोक कुमार जी प्रबोध, श्री तृषपाल जी सनौली नंगला एवं श्री बुधसिंह जी वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशकों के प्रभावशाली भजन हुए। कार्यक्रम प्रतिदिन प्रात: 7.30 से 12 बजे तक, मध्याह्नोपरान्त उपरांत 3.00 से 6.00 तथा रात्रि 8.00 से 12.00 बजे तक चला कार्यक्रम का संचालन श्री देवेन्द्र जी आर्य द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया। भोमपाल चौधरी, मन्त्री, आर्य समाज धनौरा

www.thearyasamaj.org

होली कैसे मनाएं

- विजय प्रकाश

होली का पर्व आनन्द और उल्लास का पर्व है और यह उस समय मनाया जाता है जबकि ऋतुराज बसन्त की मोहकता वातावरण में ताजगी और मादकता भर देती है तथा प्रकृति अपने पूर्ण यौवन में श्रृंगार मंडित होती है? यह उन पर्वो में से एक पर्व है जो ऋतु परिवर्तन पर वायु, जल आदि की शुद्धि के लिए यज्ञ रूप में मनाए जाते हैं। इस पर्व के यज्ञ में नई आई हुई आषाढ़ी फसल के अधपके यवों (जवौ) को भूनने के कारण इस पर्व का नाम होलकोत्सव पड़ा था। संस्कृत में अग्नि में भुने हुए अधपके अन्न को होलक कहते हैं। इन यवों को यज्ञाग्नि की भेंट करना एक धार्मिक कृत्य था जिसके पीछे अन्न का स्वयं उपभोग करने से पूर्व दूसरों को भेंट करके उसे परिष्कृत करने की भावना काम करती थी।

कृषक जन आषाढ़ी की फसल के रूप में अपने कठोर परिश्रम का फल पाने के हर्ष की अभिव्यक्ति सामूहिक रूप से आनंन्दोत्सव मना कर करते थे। केवल हमारे देश में ही नहीं अन्य देशों में भी नई फसल पर उत्सव मनाने की परिपाटी चली आ रही है। रूस में फसल कटने पर कृषक अपने इष्ट मित्रों को पकवान आदि से परितृप्त करके उत्सव मनाते हैं। जापान में भी जब धान की फसल कटती है तब चावलों की रोटियों आदि के सहभोज होते हैं और गाना-बजाना होता है। यूरोप में सेंट वेलन्टाइन का दिन और इंग्लैड में में पोल के उत्सव भी इसी प्रकार के होते हैं। परन्तु देशकालिक परिस्थिति में आमूल परिवर्तन हो जाने से लोग विशुद्ध वैदिक परम्परा को भूल गए और घास-फूस, कंडों और लकड़ियों की होली बनाकर उसको दिया जाना ही वैदिक यज्ञ का अनुष्ठान समझ लिया गया। घृत और सामग्री आदि सुगन्धित एवं रोग नाशक वस्तुओं के द्वारा यज्ञानुष्ठान की बात अचिन्त्य बन गई। इतना ही नहीं होली में जलाए जाने के लिए काष्ठादि की चोरी करने में आनन्द की अनुभूति भी समाविष्ट कर दी गई। हां यवों को भूनने की प्रथा रूढ़ी के रूप में अवश्य अपना ली गई।

इस दिवस के आनन्दोत्सव को जो अशिष्ट रूप दिया गया है उसका चित्रण करने में लज्जा आती है। ढाक के फूलों का रंग और चन्दन का लेप दोनों ही स्वास्थ्यप्रद होते हैं। जब इस उत्सव को शिष्ट रूप प्राप्त था तब प्रायः इन्हीं का प्रयोग होता था। अब तो स्वास्थ्य विनाशक रंगों कूड़े कचरे एवं कीचड़ तक खुलकर प्रयोग होता है। जब अनिच्छुक लोग इस प्रकार की बेहूदगी के शिकार होते हैं तो प्रायः अप्रिय घटनाएं हो जाती हैं। भद्दे दृश्य उपस्थित करना, गंदे हास्य एवं व्यंग करना शिष्ट भावना पर घोर आघात करना होता है। जिस मनोरंजन में अशिष्टा एवं अनैतिकता की गंध आती हो उसका न होना ही अच्छा है। प्राचीन काल में शिष्ट नाटकों आदि के आयोजन किए जाते थे परन्तु उनसे लोगों की शिष्ट भावना पर आघात न होने दिया जाता था। सभ्यतम् आर्य जाति के उत्तराधिकारियों की कुचेष्टाओं का जिस विकृत ढंग से विदेश में प्रदर्शन किया जाता है, देशवासियों को जंगली और जाहिल दिखा कर इनका जैसा भद्दा मजाक उड़ाया जाता है उससे किस देश एवं सभ्यताभिमानी को दुःख न होता होगा?

पौराणिक परम्परा मुख्य रूप से हमारे अनुष्ठानों और पर्वो की विकृति के लिए उत्तरदाता है। यही परम्परा इस पर्व की विकृति में काम करती देख पड़ती है। इस परम्परा ने इसपर्व के साथ प्रहलाद की बुआ होलिका के अग्निसात् होने की कपोल कल्पित कथा

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

www.thearyasamaj.org

प्रथित की है साथ ही इस पर्व को पौराणिक शूद्रों का पर्व स्थिर करके और उन्हें कुचेष्टाओं का लाइसैंस देकर वास्तविक नाम और स्वरूप के साथ घोर अन्याय भी किया है। इस परम्परा से ईश्वर विश्वास की कुछ प्रेरणा अवश्य मिलती है।

इस पर्व पर पारस्परिक जात्यादि भेद-भाव भुलाकर प्रेम प्रदर्शन तथा प्रेम सम्बर्द्धन का साधन बनाया जाना अंधकार में प्रकाश की रेखा कही जा सकती है। आज अपने ही देश में मानव की स्वार्थपरता अपने विविध अभिशापों के साथ मानवता के साथ खिलवाड़ कर रही है और दूसरों की आकांक्षाओं एवं अरमानों के साथ फाग खेल रही है। पर के स्थान में 'स्व' के इस फाग ने देश और समाज में अराजकता की स्थिति उत्पन्न करके रख दी है जिसके होते हुए गरीबी, दोहन और शोषण से पीड़ित लोगों को आनन्द और उल्लास की वास्तविक अनुभूति क्यों कर हो सकती है?

यदि हम इस पर्व के वास्तविक शुद्ध एवं पवित्र स्वरूप को पुन: प्रतिष्ठित कर सकें, इसे हुल्लड़बाजी एवं अशिष्टता से न मना कर शिष्टता पूर्वक मनाएं, यज्ञ करें, चन्दन का तिलक करें, फूलों से होली खेलें और सबको गले लगाकर, अहंकार को त्यागकर मेल-जोल और भाई-चारे को अपनाकर देश और मानव समाज के सामने भ्रातृत्व का सच्चा स्वरूप प्रस्तुत करें जो स्वार्थ एवं कृत्रिमता से रहित हो। देश और समाज के हित को, अपने परिवार, ग्राम, नगर एवं प्रान्त से ऊपर रखें तो इस पर्व का उल्लास और आनन्द न केवल देश में ही व्याप्त होगा अपितु इसकी सुखद रश्मियां दिग दिगान्तर में व्याप्त होकर संसार के हर समुदाय में व्याप्त होकर संसार के हर समुदाय में योग देने का भी कारण बनेगी जो आज पैशाचिक भीषणता के साथ रक्तरंजित होली खेलने का आयोजन कर रहा है। - आर्य समाज, शकरपुर, दिल्ली-92

आया होली का त्यौहार

- राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति

समता-समृद्धि व समरसता, का हो धरती पर संचारण।
सभी समस्याओं का हो फिर, अब भारत में शीघ्र निवारण॥
जाति वर्ग का भेद मिटाकर, करें परस्पर सद्व्यवहार।
आया होली का त्यौहार, आया होली का त्यौहार॥
छुआछूत है कोढ़ हमारा, इसको आओ! अभी मिटाएं।
जो हैं पिछड़े-दलित कहाते, उन सबको हम गले लगायें।
सब जन हों संगठित यहाँ पर-बढ़े एकता का आधार।
आया होली का त्यौहार, आया होली का त्यौहार॥
बन्धन टूटे जाति पांति का, एक सूत्र में बंधे समाज।
राष्ट्र, भक्ति की जगे भावना, राष्ट्र समर्पित हम हों आज।
राम, कृष्ण, गौतम, गांधी के स्वप्न सुनहरें हों साकार।
आया होली का त्यौहार, आया होली का त्यौहार॥
बढ़े प्रगति पथ कदम हमारे, सौख्य-सदशयता हो जाग्रत।
हृदय-हृदय की दूरी कम हो, परहित में हो हम सब रत।
नव-जागृति का, नवलचेतना का फिर खिले शुचित अभिसार।
आया होली का त्यौहार, आया होली का त्यौहार॥

- मुसाफिरखाना, सुलतानपुर, उत्तर प्रदेश

www.thearyasamaj.org

नवजीवन, नवोत्साह एवं साहसी देशभक्त वीरों के अमर बलिदानों का प्रतीक

- सत्यबाला देवी

नव जीवन के प्रतीक प्रकृति नटी के अनुपम सौन्दर्य एवं मातृभूमि के गौरव, सम्मान एवं स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु दीवाने और साहसी वीरों के अमर बलिदानों के महापर्व ऋतुराज बसन्त के शुभागमन से समस्त चराचर सृष्टि में हर्ष उल्लास, उमंग एवं उत्साह का सागर हिलोरें लेने लगता है। समस्त प्राकृतिक वातावरण में शोभा और सौन्दर्य बिखर जाता है। प्रकृति सुन्दरी नव पल्लवों का हरित परिधान धारण किए, नाना रंग बिरंगे कुसुमों के विविध आभूषणों से अलंकृत सरसों के पीत वर्ण पुष्पों की बासन्ती साड़ी से आवेष्टित, सोलह श्रृंगार किए सजी संवरी नई नवेली दुल्हन सी अपने प्रियतम बसन्त का अभिनन्दन करने हेतु उद्यत हो उठती है। यही नहीं कल-कल निनादिनी पुण्य सलिला सरिताएँ भी ऋतुराज बसन्त का अभिषेक करने हेतु उत्सुक हो उठती है। पुष्प गुच्छों पर गुञ्जार करते हुए मधुपान द्वारा तृप्त मस्त भ्रमरगण, कलरव करते विविध विहंग समूह, आम्रकुंजों में पंचम स्वर अलापती उन्मत्त कोकिला आदि मानों बन्दी गणों के रूप में ऋतुराज की अभ्यर्थना करते हुए, उसका प्रशस्ति गान कर एक निराले ही रहस्यमय लोक का सृजन कर, अखिल सृष्टि को मधुरिम प्रेम का सन्देश वहन करते हुए समस्त वातावरण को प्रेममय प्रेरणादायक, स्फूर्तिमय, उत्साहवर्धक, स्निग्ध, मधुर, सरस एवं मनोहर बना देते हैं। जिस पादप समूह को आततायी पतझड़, पत्र पुष्प विहीन कर ठूंठ सदृश, जीर्ण-शीर्ण एवं जर्जर बना देता है, बसन्त का आविर्भाव उन्हें पुन: नव-किसलय दल से सुसज्जित कर, अनुपम सौन्दर्य वैभव से अलंकृत कर नवजीवन प्रदान कर देता है। भयंकर शीत से चराचर सृष्टि को उत्पीड़ित एवं त्रस्त करने वाले शिशिर की विदा और नवोल्लास के प्रतीक ऋतुराज बसन्त के अवतरण से समस्त जड़ चेतन उसी प्रकार उल्लसित एवं आनन्द मग्न हो उठते हैं, जिस प्रकार किसी अत्याचारी शासक के पराभव से समस्त प्रजाजन सुख-शान्ति और निश्चिन्तता का अनुभव कर आनन्द विभोर हो उठते हैं। बसन्त के आविर्भाव से समस्त वातावरण नव आभा, नव ज्योति, नव-छटा नव-सौन्दर्य एवं नव-आलोक से ज्योतिर्मान हो उठता है। मन्द-मन्द प्रवाहित, शीतल सुगन्धित दक्षिणी मलय समीर नव-विकासित पुष्प-दलों से अठखेलियाँ करने लगती है जिसके फलस्वरूप समस्त मानव-समाज नाच-रंग, गायन-वादन आदि नाना आमोद-प्रमोदों एवं विविध मनोरंजक क्रीड़ाओं में मग्न हो आत्म विस्मृत हो उठता है। अखिल विश्व में ऋतुराज बसन्त का अखण्ड साम्राज्य प्रतिष्ठित होने के फलस्वरूप मानव-जीवन में नहीं अपितु पशु-पक्षियों तक के हृदयों में भी नवोत्साह, नव-अभिलाषा, नवआशा, नव-चेतना, नव-जागरण एवं नव-स्फूर्ति का संचार होने लगता है। समस्त सृष्टि में विरला ही कोई हत भाग्य होगा जिसे कामन मयूर बसन्त की मनोमुग्धकारी, ज्योत्सनामय, अपूर्व, अनिबर्चनीय नयनाभिराम उज्ज्वल दैवीय बासन्तिक छटा को निरखकर नाच न उठता हो।

ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव पर संवेदनशील रसिक कवि हृदय का तो कहना ही क्या वह तो ऋतुराज के इस अद्वितीय दिव्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो उसकी सार्वभौमिक विजय का गुणगान करने लगता है। विश्व के अनेक कविजनों ने ऋतुराज की अनुपम शोभा और अपूर्व छटा का चित्रण कर अपनी लेखनी को चित्रकारों ने अपनी तूलिका को धन्य किया है। कविकुल चूड़ामणि महाकवि कालिदास ने 'कुमार सम्भव में बसन्त का इतना सरस, सजीव और हृदयग्राही चित्रण किया है कि रसिक पाठक गण उसे पढ़ते-पढ़ते आत्म विभोर और मन्त्र मुग्ध हो उठते हैं। कवि कुल शिरोमणि जयदेव, मैथिल कोकिल विद्यापति, महाकवि केशव प्रभृति कवि जनों के काव्य में तो बसन्त इठलाता सा दृष्टिगोचर होता है। जायसी की विरह दग्धा नायिका नागमति तो बसन्त के अलौकिक, दिव्य बासन्तिक सौन्दर्य की अनुपम छटा का अवलोकन कर अपनी विरह व्यथा ही नहीं प्रत्युत अपने प्राण स्वरूप प्रियतम को भी विस्मृत कर मस्ती में झूमने लगती है। भारतीय काव्य गगन के चन्द्र महाकवि तुलसी दास ने भी

www.thearyasamaj.org

रामचरित मानस में बसन्त की बासन्तिक शोभा का चित्रांकन कर नव चेतना एवं नव-संकल्प का शुभ-संदेश दिया है। रीति-कालीन कवियों को तो पग-पग और डगर-डगर में बसन्त ही बिखरा दृष्टिगोचर होता है।

योगराज भगवान श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध प्रांगण में मोह ग्रस्त अर्जुन को अन्याय और अत्याचार का दमन करने और आततायी कौरवों के विरूद्ध लोहा लेने के लिए नव-साहस का सन्देश देते हुए उसमें दुष्ट दलन, पौरुष, वीरता और लोक कल्याण की भावना जागृत करने हेतु कहा था। "**ऋतुनाम कुसुमाकरा:।**" छायावादी युग की प्रतिनिधि कवियित्री महावेदी वर्मा भी, अनुपम यौवनमयी, सौन्दर्यमयी प्रकृति प्रदत्त आभूषणों एवं आभरणों से समअलंकृत बसन्त रजनी का आह्वान करती हुई कहती है," धीरे-धीरे उतर क्षितिज से ऐ! बसन्त रजनी! तारकमय नववेणी बन्धन," इत्यादि। वस्तुत: बसन्त रजनी के चेतन, व्यापक, मनोमुग्धकारी व्यक्तिव का दर्शन कराता है। अनन्त शक्तिशाली, नवचेतना जागृत करने वाले ऋतुराज बसन्त के विश्वव्यापी प्रभाव से तपोवन भी अछूते नहीं रहते। जिसके फलस्वरूप तपोवनों की शान्त उन्मुक्त, स्निग्ध, ज्योत्सनामयी सुरम्य प्राकृतिक बासन्तिक छटा तपोधनी महर्षियों के हृदयों में भी अनन्तता के भाव जागृत करने में समर्थ होती रही है। फलत: वे आत्म-साधन के साथ-साथ आध्यात्मिक चिन्तन में दत्तचित्त हों उस अनन्त सौन्दर्यशाली परम शक्ति समन्वित, निराकार निर्विकार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी प्रभु का साक्षात्कार करने में भी सफल होते रहे हैं।

यही नहीं ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते-हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव-हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु-शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक-एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे। पुरजा--पुरजा कट मरे तऊ न छाड़े खेत।' दूसरी ओर वीरांगना राजपूत ललनाएँ भी अपनी आत्मरक्षा हेतु पूजा की थाली लिए अपने साहसी वीरों का अनुगमन करते हुए जौहर व्रत का अनुष्ठान करने हेतु प्रज्ज्वलित चिता में कूद पड़ती थी। अत: वीर हृदयों में इस प्रकार अदमनीय देश की स्वाधीनता की रक्षा हेतु साहस, अपूर्व वीरता, अद्भुत शौर्य, महान आत्म त्याग एवं अभूतपूर्व आत्म बलिदान की भावना का उदय करने वाला ऋतुराज बसन्त वस्तुत: सत्यार्थों में ऋतुराज कहलाने का अधिकारी है। इसी भावना को लक्ष्य कर श्रीमती सुभद्रा कुमारी, चौहान ने अपनी ओजस्विनी कविता, "वीरों का कैसा हो बसन्त" में भारतीय वीरों द्वारा सत्यार्थों में बसन्त मनाने का चित्रांकन किया है। जिसका साक्षी आज भी भारत का प्रहरी स्वरूप हिमाचल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, हल्दी घाटी तथा राजस्थान के अब रण-प्रांगण एवं 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में झांसी की रानी सम वीरांगनाओं और मंगल पाण्डे समान देशभक्तों समान देश प्रेम की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों की गाथाएँ सुना रही हैं।

भारत माँ के वक्ष स्थल स्वरूप पंचनद (पंजाब) के वीरों साहसी सपूतों ने अपनी मातृभूमि से सदैव यही वरदान एवं शुभाषीष मांगी है, 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला माए री मेरा रंग दे बसन्ती चोला', और ऐसा ही अलौकिक बसन्ती चोला धारण कर शहीद भगतसिंह और उनके साथी वीरों ने, पराधीनता की बेड़ियां में जकड़ी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने हेतु हंसते-हंसते फांसी के फन्दों को चूम कर गले लगा लिया था।

ऋतुराज बसन्त के उस पावन महापर्व को एक अन्य अभूतपूर्व बलिदान ने और भी चार चान्द लगा दिए हैं। इसी पवित्र पर्व के दिन धर्मवीर, दृढ़व्रती चतुदर्श वर्षीय वीर बालक हकीकत राय ने वैदिक धर्म की रक्षा हेतु तुच्छ प्राणों का मोह त्याग, अपने अमर बलिदान तत्कालीन आततायी नृशंस मलेच्छ शासक का

www.thearyasamaj.org

गर्व चूर्ण किया था। कहना न होगा कि ऋतुराज बसन्त द्वारा ही उस वीर बाल हृदय में भी धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की गई थी। पर यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि वीर बालक हकीकत के इस अमर बलिदान ने ऋतुराज बसन्त को महत्त्वपूर्ण, गौरवशाली और प्रभावशाली बना दिया था।

बसन्त के महान् पर्व के दिन वीर बालक हकीकत ने अपने जिस अद्‌भुत आत्म त्याग, अपूर्व निर्भयता, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प एवं अद्वितीय धार्मिक आस्था, विश्वास और श्रद्धा का परिचय दिया उन्हीं अमिट पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए धर्म प्रधान भारत की भावी पीढ़ियाँ चिरन्तन काल तक देश और धर्म की बलि वेदी पर हंसते-हंसते आत्म बलिदान करने के लिए सतत् तत्पर रहेंगी। हकीकत का बलिदान किसी व्यक्ति विशेष का बलिदान नहीं वह तो स्वधर्म, स्वजाति एवं स्वदेश हित प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी, निर्भय शूरवीरों के आत्म बलिदान का प्रतीक है। अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण के सन्मुख शीश न झुकाने वाले महान् त्यागी हृदयों का आदर्श है। वीर हकीकत पंचनद की उसी वीर प्रसू पावन भूमि पर अवतरित हुआ जिसके साहसी वीर सपूतों को मातृभूमि की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे पराधीनता की अवमेघ लौह श्रृंखलाओं में आबद्ध करने वाले, उसे पदाक्रान्त एवं पददलित करने की कुत्सित इच्छा से पूर्ण विदेशी दस्युओं से सदैव लोहा लेने एवं आत्मोत्सर्ग करने का गौरव प्राप्त होता रहा है। इसीलिए यह वीर भूमि शाश्वत काल से उसी प्रकार अपने दिव्य पुत्रों के अमर बलिदान अर्पित कर बसन्त के शुभागमन का स्वागत उनके रक्त से करती रही है। ऐसे ही निर्भय, साहसी देशभक्त वीरों ने अनेक बार देश और धर्म की नैराश्य पूर्ण, साहस विहीन, दु:ख दैन्य ग्रस्त, अभाव पीड़ित परिस्थितियों में पुन: बसन्त का अवतरण कर उसे सुख सौभाग्य, समृद्धि रूपी पत्र पुष्प समन्वित और बल वैभव से सम्पन्न करने का दृढ़ संकल्प पूर्ण किया है। यद्यपि इस दृढ़ व्रत के पालनार्थ उन्हें नाना यातनाएँ भी सहन करनी पड़ी, आजन्म आपद्विपदाओं की विशाल वाहिनी से जूझना पड़ा। यहीं नहीं प्रत्युत अपने प्राण तक भी विसर्जित करने पड़े पर फिर भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा।

बसन्त का यह पावन शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमें उन्हीं भारत माँ के सच्चे वीर सपूतों का स्मरण कराता है। आओ! आज हम सब उन अमर शहीदों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। केवल बसन्ती वस्त्र धारण कर आमोद-प्रमोद में रत हों, मनोरंजन और हास-विलास के साधनों में संलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव-जागरण नवोत्साह, नव-चेतना, नव-प्रेरणा एवं नवजीवन का सन्देश ग्रहण कर हमें राष्ट्र के जीवन में सत्यार्थो में बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन-जीवन पूर्णतया सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, उन्नतिशील, विकासशील और प्रगतिशील बन सके।

यद्यपि हमारे देश को पराधीनता की श्रृंखलाओं से मुक्त हुए साठ से भी अधिक वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक इस अभागे देश के जन-जीवन में बसन्त का अवतरण नहीं हो सका। आज भी इस देश की पीड़ित, शोषित, अभावग्रस्त जनता निर्धनता एवं भ्रष्टाचार के जुए के नीचे दबी कराह रही है। आज भी देश में चतुर्दिक बेकारी, मंहगाई, रिश्वतखोरी, लूट-पाट, हिंसा, प्राणहन, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न एवं असन्तोष का अखण्ड साम्रज्य व्याप्त है। आज भी अलगाववादी, उग्रवादी तथा आतंकवादी प्रवृत्तियों द्वारा चारों ओर निरीह, निरपराध, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ एवं राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति को ध्वस्त किए जाते देख समस्त देशवासी आतंकित और त्रस्त हो रहे हैं। समस्त जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। जहाँ एक ओर कतिपय प्रान्तों में असुरक्षा, अव्यवस्था एवं आतंक से हाहाकर मचा हुआ है। वहाँ दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति पद लोलुपता, कुर्सी की खींचतान शासन हथियाने, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धिता, कट्टरता, क्रूरता और बर्बरता के ताण्डव नृत्य ने समस्त वातावरण को विषाक्त, बना दिया है। वहाँ दूसरी ओर वाह्य आक्रामक शद्रियों को इस देश की अखण्डता, एकता, संगठन, समृद्धि और सुख शान्ति को मुँह बाए निगलने के लिए तत्पर होते देखकर प्रत्येक भारतवासी का हृदय अत्यधिक आत्मग्लानि, पीड़ा और व्यथा से भर उठा है।

अत: हार्दिक दु:ख से कहना पड़ता है कि समस्त विश्व को मैत्री, बन्धुत्व, प्रेम, मानवता एवं आध्यात्मिकता

www.thearyasamaj.org

का अमर सन्देश वहन करने वाला, धन-धान्य-समन्वित, पूर्व का यह प्रतिनिधि देश आज स्वयं ही बल वैभवहीन, मानसिक दासता में आबद्ध घोर निराशा एवं पतन के गर्त में डूब रहा है। आन्तरिक और वाह्य संघर्षो ने इसकी जड़ों को खोखला कर दिया है। एक ओर विदेशी शत्रु अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए इसकी स्वतन्त्रता का पुन: अपहरण करने हेतु सन्नद्ध हो रहे हैं तो दूसरी ओर नाना देशद्रोही जयचन्द देश में उपद्रव और अशान्ति मचाकर उसके अनुशासन और व्यवस्था को भंग कर, इसे पुन: विदेशी शक्तियों के हाथों में सौंप अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

अत: ऋतुराज बसन्त के अवतरण के शुभ अवसर पर प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ ग्रहण करनी होगी कि वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी निराशा एवं दुर्दैव रूपी शीत से पीड़ित राष्ट्र में आह्लामय, सुख-सौभाग्य समन्वित जीवन रूपी शुभ बसन्त लाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। यही नहीं प्रात: स्मरणीय, जगत वन्द्य पूज्य बापू के अपूर्वस्वप्न को साकार करने हेतु भारत में सत्यार्थों में राम-राज्य रूपी बसन्त की प्रतिष्ठा करने में अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी नहीं हिचकिचायेगा। तभी हम वास्तव में बसन्त मनाने के अधिकारी होंगे।

राष्ट्र जीवन तरू के इस निराशा रूपी पतझड़ को समाप्त कर इसे पुन: सुख शान्ति, समृद्धि, वैभव, शक्ति एवं आशा के नव पल्लवों और पुष्पाभरणों से समलंकृत करने का बीड़ा उठाना होगा। इस दुर्गम कण्ट-काकीर्ण पथ का अवलम्बन करने हेतु प्रत्येक भारतवासी को पूर्ण सहयोग देने के लिए अपने निजी सुखों हितों संकीर्ण स्वार्थ वृत्तियों, पद लालसा एवं अधिकार गर्व आदि सभी का त्याग करना होगा। राष्ट्रीय जीवन में बसन्त का आविर्भाव करने हेतु पूंजीवाद का सर्वथा उन्मूलन कर, समरसता, समानता, सहिष्णुता, पारस्परिक सहानुभूति आदि की प्रतिष्ठा करनी होगी। प्रत्येक भारतवासी को कठिन परिश्रम, त्यागमय जीवन को अपनाते हुए राष्ट्र दायित्वों और नागरिक कर्त्तव्यों का समुचित और सत्यता से पालन करते हुए समाज और राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा तभी हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक और सफल हो सकेगा।

- डी-113, शिवविहार, रोहतक रोड, दिल्ली-110087

जिन्दगी

- राज कुमार अरोड़ा गाइड, हर्ष निवास नीयर गंभीर स्कूल, गली न. 2, दयानन्द नगर, बहादुरगढ़

जिन्दगी में बार-बार उतार चढ़ाव आना भी जरूरी है।
हर बार उतार चढ़ाव में रहना और सम्भलना ही मजबूरी है।।
सुख आये तो हंस लेना, दु:ख आये तो हंसी में उड़ा देना।।
अपनों को अपना समझते है सब, तुम गैरों को अपना बना लेना।।

जिन्दगी में अच्छे लोगों की ही तलाश में क्यों रहते हो।
हर कोई तुम्हारे लिये अच्छा करे, बस इस आस में क्यों रहते हो।।
खुद अच्छे बन जाओ, अच्छे बन हर किसी के काम आओ।
तुमसे मिल के तलाश होगी पूरी, बस यही शानदार इनाम पाओ।।

खुशियों को खुशी के साथ जिओगे तो खुशियाँ दोहरी हो जायेगी।
खुशी कभी भी बाहर से नहीं, अन्दर से ही तो उपजती हैं।।
खुशियों को जी भर के जिओ और बांटो भी खूब जी भर के।
फिर यही खुशियां, देखना महसूसना, दोहरी से चार गुना हो जायेगी।।

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज स्थापना दिवस 10 अप्रैल के अवसर प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की पृष्ठभूमि और उसके प्रेरक लोग

- मनमोहन कुमार आर्य

हमें एक आर्यबन्धु ने पूछा है कि आर्यसमाज की स्थापना का महर्षि दयानन्द जी को सुझाव किन आर्य-श्रेष्ठियों ने दिया था? हम सब यह तो जानते हैं कि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने मुम्बई में सन् 1875 में की थी परन्तु स्थापना की पृष्ठभूमि और इसकी यथार्थ तिथि से सभी लोग पूर्णत: परिचित नहीं है। आर्यसमाज की स्थापना की तिथि विषयक भिन्न मत भी हैं। अत: हमने जिज्ञासु बन्धु श्री राज आर्य चौहान को एक लेख द्वारा इसका विस्तृत उत्तर देने का विचार किया और उन्हें इससे अवगत करा दिया। महर्षि दयानन्द जी ने मुम्बई की तीन बार यात्रायें की। प्रथम बार वह सोमवार 24 अक्टूबर, सन् 1874 से 30 नवम्बर, सन् 1874 तक यहां रहे, दूसरी बार बृहस्पतिवार 29 जनवरी सन् 1875 से बुधवार अन्तिम जून सन् 1875 तक और तीसरी बार बुधवार 1 सितम्बर सन् 1875 से अप्रैल, 1876 तक रहे।

पहली बार की यात्रा में आर्यसमाज की स्थापना करने का विचार मुम्बई के निवासियों में उत्पन्न हुआ। इस शीर्षक से महर्षि दयानन्द के प्रमुख जीवनीकार पं. लेखराम जी ने जीवन चरित में लिखा है कि 'स्वामीजी के चले जाने पर (अर्थात् 30 नवम्बर, सन् 1874 के बाद) फिर इस उत्तम धर्मकार्य अर्थात् सत्योपदेश का चलाना कठिन होगा इसलिए एक 'आर्यसमाज' स्थापित होना चाहिए, इस प्रकार का विचार कई-एक धर्मजिज्ञासु गृहस्थों के मन में उत्पन्न हुआ।' इसके बाद 'कुछ स्वार्थी ढोंगी भक्तों द्वारा इस विचार का विरोध' शीर्षक देकर पं. लेखराम जी लिखते हैं कि 'इस विचार को सुनकर स्वामी जी को यहां (मुम्बई) बुलाने में जिन्होंने अधिक भाग लिया था, वे लोग क्रुद्ध हो गए, क्योंकि उन लोगों का यह हेतु था कि स्वामी जी के द्वारा किसी विशेष मत का खंडन करवाकर, उस मत के बहुत से अनुयायियों को अपनी ओर करके, स्वामी जी के जाने के पश्चात् उन लोगों को अपना शिष्य बनाकर उन्हें कथा-श्रवण करने के लिए आने का उपदेशक किया जाये। (ये पौराणिक पंडित लोग नवीन वेदान्ती थे) वैसे ही जो लोग वेद को नहीं मानते थे और स्वामी जी के सहायक थे (अर्थात् ब्रह्मसमाजी और प्रार्थना-समाजी) वे लोग भी इस विचार (आर्यसमाज की स्थापना) को जानकर प्रसन्न नहीं हुए, क्योंकि उन लोगों को भी यह निश्चय था कि स्वामी जी के चाहने वालों में से अधिकतर लोग हमारी समाज में सम्मिलित होंगे।

इसके बाद पं. लेखराम जी ने 'सच्चे धर्म जिज्ञासुओं का निश्चय अधिक दृढ़ हुआ।' शीर्षक से लिखा है कि इसी प्रकार जब कुछ विशेष धर्मजिज्ञासुनाओं को इन दोनों (प्रकार के लोगों अर्थात् नवीन वेदान्ती पौराणिक और ब्रह्समाजी व प्रार्थना-समाजी) का हार्दिक अभिप्राय विदित हुआ कि वे लोग ऊपर से तो सत्यशोधक हैं और (हृदय व आन्तरिक रूप से) अत्यन्त स्वार्थी हैं, तब 'आर्यसमाज' की स्थापना करने की उनकी इच्छा बहुत बढ़ गई और अन्तत: समाज स्थापित करने पर वह उद्यत हो गए। जिसका परिणाम यह हुआ कि संवत् 1931 (सन् 1874) के महानुभावों ने उस महापंडित (दयानन्द जी)को अपना विचार समझा कर उनके सामने 60 सज्जनों से हस्ताक्षर करवाकर 'आर्यसमाज' चलाने का निश्चय किया और स्वामी जी ने हिन्दी भाषा में उसके नियम भी रच दिए और उसमें समय-समय पर धर्मोपदेश करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया। इस पर भी आर्यसमाज की स्थापना न हो सकी क्योंकि दूसरे विघ्न आ गये। (आर्यसमाज की स्थापना के धर्मजिज्ञासु) कुछ सज्जनों पर तो बिरादरी की ओर से ऊपर से बहुत से दबाव डाले गए और कुछ ने इस आर्यसमाज का सभासद् बनने को धनाढयता की शान के विरूद्ध समझा और कुछ सज्जनों के मित्रों और सम्बन्धियों से इस बात (आर्यसमाज की स्थापना कराने व उसका सभासद बनने) को लेकर झगड़े आरम्भ हो गए। (आर्यसमाज की स्थापना के धर्मजिज्ञासु) कुछ सज्जनों पर तो बिरादरी की ओर से ऊपर से बहुत से दबाव डाले गए और कुछ ने इस आर्यसमाज का सभासद् बनने को धनाढ्यता की शान के विरूद्ध समझा और कुछ सज्जनों के मित्रों और सम्बन्धियों से इस बात

www.thearyasamaj.org

(आर्यसमाज की स्थापना कराने व उसका सभासद बनने) को लेकर झगड़े आरम्भ हो गए। अन्त में यह भी हुआ कि उस महापण्डित (दयानन्द) पर लोग नाना प्रकार के कपोल-कल्पित दोष भी लगाने लगे कि वह ईसाई है, अंग्रेजों का नौकर, म्लेच्छ है आदि-आदि (इस अभिप्राय से लगाने लगे कि जिससे स्वामी दयानन्द जी के प्रति उनकी श्रद्धा उठ जाए)। परिणाम यह हुआ कि इस समय आर्यसमाज की स्थापना का कार्य सम्पन्न नहीं हो सका।

स्वामीजी बृहस्पतिवार 29 जनवरी, सन् 1875 को दूसरी बार अहमदाबाद से मुम्बई पधारे। बम्बई में स्वामी जी के दूसरी बार आने पर आर्यसमाज स्थापना का विचार पुन: अंकुरित हुआ। स्वामी जी पिछली प्रथम बम्बई यात्रा के बाद गुजरात की ओर चले जाने से आर्यसमाज की स्थापना का जो विचार बम्बई वालों के मन में उत्पन्न हुआ था, वह ढीला हो गया था परन्तु अब स्वामी जी के पुन: आ जाने से फिर बढ़ने लगा और अन्तत: यहां तक बढ़ा कि कुछ सज्जनों ने दृढ़संकल्प कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, बिना (आर्यसमाज) स्थापित किए हम नहीं रहेंगे। स्वामी जी के गुजरात से लौटकर बम्बई आते ही फरवरी मास, सन् 1875 में गिरगांव के मोहल्ले में एक सार्वजनिक सभा करके राव बहादुर दादू बा पांडुरंग जी की प्रधानता में नियमों पर विचार करने के लिए उपसभा नियत की गई। परन्तु उस सभा में भी कई एक लोगों ने अपना यह विचार प्रकट किया कि अभी समाज-स्थापना न होना चाहिए। ऐसा अन्तरंग विचार होने से वह प्रयत्न भी वैसा ही (निष्फल) रहा।

उपर्युक्त विवरण को प्रस्तुत करने के बाद पं लेखराम जी 'बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना' शीर्षक से आर्यसमाज की स्थापना संबंधी घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं कि 'और अन्त में जब कई एक भद्र पुरुषों को ऐसा प्रतीत हुआ कि अब समाज की स्थापना होती ही नहीं, तब कुछ धर्मात्माओं ने मिलकर राजमान्य राज्य श्री पानाचन्द आनन्द जी पारेख को नियत किए हुए नियमों पर विचारने और उनको ठीक करने का काम सौंप दिया। फिर जब ठीक किए हुए नियम स्वामी जी ने स्वीकार कर लिए तो उसके पश्चात् कुछ भद्र पुरुष, जो आर्यसमाज स्थापित करना चाहते थे और नियमों को बहुत पसन्द करते थे, लोकभय की चिन्ता न करके, आगे धर्म के क्षेत्र में आये और चैत्र सुदि 5 शनिवार, संवत् 1932, तदनुसार 10 अप्रैल, सन् 1875 व 3 रवीउल् अव्वल, सन् 1292 हिजरी व संवत् 1797, शालिवाहन व सन् 1283, फस्ली व माहे खुरदाद, सन् 1284 फारसी व चैत 29, संक्रान्ति संवत् 1932 को शाम के समय, मोहल्ला गिरगांव में डाक्टर मानक जी के बगीचे में, श्री गिरधरलाल दयालदास कोठारी बी.ए., एल.एल.बी. की प्रधानता में एक सार्वजनिक सभा की गई और उसमें यह नियम सुनाये गये और सर्वसम्मति से प्रमाणित हुए और उसी दिन से आर्यसमाज की स्थापना हो गयी।

उपर्युक्त लेख देने के पश्चात् आर्यसमाज के 28 नियमों का क्रमश: उल्लेख है व उससे पूर्व संवत् 1931 चैत्र सुदि 5, शनिवार को आर्यसमाज बम्बई में स्थापित हुआ, पंक्ति मुद्रित है। इससे भी पूर्व मोटे अक्षरों में लिखा है 'प्रथम आर्यसमाज के नियम'। 28 नियमों के बाद बताया गया है कि फिर अधिकारी नियत किये गए। तत्पश्चात् प्रति शनिवार सायंकाल को आर्यसमाज के अधिवेशन होने लगे परन्तु कुछ मास के पश्चात् शनिवार का दिन सामाजिक पुरुषों के अनुकूल न होने से रविवार का दिन रखा गया जो अब तक है। इस विवरण में यह भी लिखा है कि स्वामी जी समाज स्थापित करने और एक दो सप्ताह चलाने के पश्चात् फिर अहमदाबाद को चले गए और वहां जाकर बड़ी प्रबल युक्तियों से स्वामी नारायमणमत का खंडन आरम्भ किया।

उपर्युक्त पंक्तियों में हमने प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की पूरी पृष्ठभूमि व स्थापना से संबंधित पं. लेखराम जी के प्रामाणिक लेखों सहित स्थापना की प्रमाणिक तिथि का उल्लेख किया है। अब यह देखना है कि आर्यसमाज की स्थापना में सबसे अधिक सक्रिय व प्रेरक लोग कौन रहे थे। पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी ने अपने ऋषि जीवन चरित में लिखा है कि ऋषि जब दूसरी बार बम्बई आये तो भक्तजनों के मन में आर्यसमाज स्थापित करने की इच्छा पुन: जागृत हुई और स्वामी जी ने भी उनसे यह (आर्यसमाज की

www.thearyasamaj.org

स्थापना का) प्रस्ताव किया। अन्य सज्जनों के अतिरिक्त लक्ष्मनदास सेमजी और राजकृष्ण महाराज इस विषय में अधिक उत्साह दिखाने लगे। राजकृष्ण महाराज ने आर्यसमाज के नियम बनाने की इच्छा प्रकट की तो स्वामीजी ने कहा कि नियम हम स्वयं बनाएंगे और एक नियमावली बना दी। राजकृष्ण महाराज ने स्वामी जी को कहा कि नियमों में जीव-ब्रह्म् के एकत्व के सिद्धानत का समावेश होना चाहिए, पीछे छोड़ देंगे। ऐसा करने से हम अनेक लोगों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित कर सकेंगे। राजकृष्ण महाराज की इस सिद्धान्त विरूद्ध बात को सुनकर स्वामी जी ने कहा कि असत्य पर आर्यसमाज को कदापि स्थापित न करूंगा। स्वामी जी के इस स्पष्ट उत्तर से राजकृष्ण महाराज नाराज हो गये और आर्यसमाज की स्थापना से पृथक हो गये। पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी ने आर्यसमाज की स्थापना में सहयोगी कुछ प्रमुख लोगों के नाम देते हुए लिखा है कि सेठ मथुरादास लौजी, सेवकलाल, करसनदास, गिरिधारीलाल दयालदास कोठारी बी.ए. एल.एल.बी. प्रभृति सज्जनों ने आर्यसमाज स्थापित करने का दृढ़संकल्प कर लिया। इन सत्यपुरुषों पर पौराणिकों ने अत्याचार भी किए और सर्वसाधारण में उनकी भरपेट निन्दा भी की, परन्तु वे अपने संकल्प पर दृढ़ रहे। राजमान् राजेश्वरी पानाचन्द आनन्दजी पारीख को आर्यसमाज के नियमों का ढांचा बनाने के लिए नियत किया गया। उन्होंने वह तैयार किया और उसे स्वामी जी के सामने प्रस्तुत किया। स्वामी जी ने उसमें उचित संशोधन कर दिया। पं. मुखोपाध्याय जी ने यह भी लिखा है कि आर्यसमाज के सभासदों की संख्या 100 के लगभग थी। इस प्रथम आर्यसमाज के पदाधि कारियों की सूची पं. लक्ष्मण जी आर्योपदेशक रचित जीवन चरित के सम्पादक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने ग्रन्थ में दी है। यह अधिकारी व सभासद हैं-प्रधान राजेश्री गिरधरलाल दयालदास कोठारी, उपप्रधान राजेश्री ठाकरसी नारायण जी, मन्त्री राजेश्री पानाचन्द आनन्द जी पारीख, उपमन्त्री राजेश्री सेवकलाल कृष्णदास, उपकोषाध्यक्ष, राजेश्री श्यामजी विश्राम, सभासद, सर्वराजेश्री श्यामजी विश्राम, सभासद: सर्वराजेश्री मूलजी ठाकरसी, छबीलदास लल्लूभाई, किसनदास उदासी पुरुषोंत्तम नारायण जी, मनसाशंकर जयशंकर दूबे, हनुमंतराज पित्ती, आत्माराम बापू दलवी, बाबू शोखीलाल झवेरीलाल, बाबू अक्षयकुमार मित्र एवं रघुनाथ गोपाल देशमुख।

महर्षि दयानन्द को मुम्बई आर्यसमाज की स्थापना के लिए प्रेरित करने वाले प्रमुख लोगों में उपर्युक्त वर्णित सभी व्यक्ति ही प्रतीत होते हैं। कुल सभासद लगभग 100 थे व कुछ अन्य ऐसे भी हो सकते हैं कि जो किसी कारण से सभासद न बने हों परन्तु आर्यसामज के सिद्धान्तों व मान्यताओं के प्रति वह निष्ठावान रहे हों। इस आर्यसमाज की स्थापना के बाद समयानुसार देश भर में आर्यसमाज का जाल बिछ गया और देश में धार्मिक व सामाजिक सुधारों सहित राजनीतिक परिवर्तन में भी आर्यसमाज की प्रमुख व महत्वपूर्ण भूमिका रही। आज आर्यसमाज द्वारा प्रचारित वैदिक धर्म विश्वधर्म का पर्याय बन गया है। लेखों व युक्ति आदि प्रमाणों से वैदिक धर्म को मानवमात्र का ईश्वर प्रदत्त व स्वाभाविक धर्म सिद्ध किया जा सकता है जो सभी मत-पन्थों व सम्प्रदायों आदि से सर्वोपरि व सर्वोत्तम है और मनुष्यों के योग-क्षेम सहित धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्रदान कराने में वैचारिक व योगाभ्यास आदि द्वारा सत्य सिद्ध होता है।

- 196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,
फोन-09412985121

होली पर्व

कवि कृष्ण "सौमित्र" साहित्यालंकार

छोड़ो झगड़े करलो प्यार होली है,
आ गले लगजाओ यार होली है,
बुरी बात है नफरत करना,
बीज प्यार के बोलो यार होली है,
हिन्दु मुस्लिम सिख इसाई,
तोड़ो मजहब की दीवार होली है,
दूर खड़ी ना करो इशारे
पहनादो बाहों के हार होली है,
प्यार के रंग में रंग दो सबको
करो नहीं कोई तकरार होली है।

www.thearyasamaj.org

शहीदे आजम पण्डित श्री लेखराम जी आर्य मुसाफिर तुम्हें शत्-शत् नमन

-कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

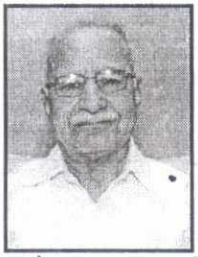

कन्हैया लाल आर्य

"आर्य समाज से तहरीर (लेखान) और तकरीर (व्याख्यान) का काम कभी बन्द नहीं होना चाहिये।" यह था अन्तिम संदेश उस महान् त्यागी शहीदे आजम पण्डित श्री लेखराम जी 'आर्य मुसाफिर' का जिन्होंने 6 मार्च 1897 को आर्य जाति को दिया था।

आर्य समाज का इतिहास रक्त रंजित है। ऋषि दयानन्द के निर्वाण के 7 वर्ष पश्चात् 19 मार्च 1890 को पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने तिल-तिल कर अपने प्राणों की आहुति दी थी। उनके बलिदान के कुछ समय पश्चात् ऋषि दयानन्द के एक वीर शिष्य चिरंजी लाल ने अपने प्राणों की आहुति देकर आर्य समाज की शोभा को चार चांद लगा दिये थे। अभी श्री चिरंजी लाल को थोड़ा ही समय बीता था कि 6 मार्च 1897 को आर्य समाज के शिरोमणि पत्रकार, यशस्वी लेखक, दार्शनिक विद्वान पण्डित लेखराम जी एक दुष्ट पाजी हत्यारे के शिकार हो गये। इसके पश्चात बलिदानियों का एक ताता ही बंध गया।

जन्म एवं स्थान- पं. लेखराम जी का जन्म 8 चैत्र 1915 संवत विक्रमी तदनुसार सन् 1858 को ब्राह्मण कुल में सैयद पुर नामक ग्राम जिला झेलम में पिता श्री तारासिंह महता और माता श्रीमती भागांमरी (भाग्य वाली) के घर हुआ। सत्रह वर्ष की आयु सन् 1875 में आप ने पुलिस में भर्ती ली तथा 1884 में सार्जेन्टी से त्यागपत्र देकर आजीवन आर्य समाज की सेवा में जुटे रहे। आर्य समाज की सेवा करने के लिए उन्हें केवल 13 वर्ष मिले, परन्तु इस अल्पकाल में भी उन्होंने 33 ग्रन्थों की रचना की, अनगिनत व्याख्यान दिए, शास्त्रार्थ किये, अनेक हिन्दू भाईयों को मुसलमान होने से बचाया और उनके हिन्दुओं से मुसलमान बने हुए को पुन: शुद्धकर स्वजाति एवं अपने धर्म पर मान करना सिखाया।

उनके प्रति उनके अध्यापक के उद्गार- पं. लेखराम जी के अध्यापक मुंशी तुलसी दास जी लिखते हैं, "उनका चेहरा हंसमुख और हृदय सरल था। मानसिक तौर पर वे बड़े बलवान थे। बुद्धि बहुत प्रखर थी। स्वभाव इतना सरल कि अपने कपड़ों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं करते थे, कुर्ते के बटन खुले हैं, पगड़ी खुल गई है, कोई चिन्ता नहीं। स्मरण शक्ति इतनी तीक्ष्ण की फारसी का पाठ उन्हें दुहराना नहीं पड़ता था। अपनी श्रेणी में सदैव प्रथम आया करते थे।

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के अनुसार- विद्यार्थी काल से ही पण्डित जी दृढ़ विश्वासी और धुन की धनी थे। जब वे स्कूल में पड़ते थे तो मौलवी जी से पानी पीने की छुटी मांगी। घड़े का पानी भ्रष्ट था। मौलवी ने कहा, "पानी पीना है तो यही पी लो, अन्यथा छुट्टी नहीं मिलेगी। इस स्वाभिमानी बच्चे ने न तो पुन: छुट्टी के लिए प्रार्थना की और ना ही भ्रष्ट घड़े का पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही व्यतीत कर दिया।

विचारधारा में अडिग व अटल- भारतीय संस्कृति और भारत के इतिहास पर इतना गर्व तथा विश्वास था कि मिडिल की परीक्षा में इतिहास के पेपर में पाठ्यक्रम में छपी पुस्तकानुसार उत्तर न देकर मिथ्या धारणाओं का खण्डन कर दिया। जैसे आर्य लोग बाहर से आये थे, यहां के मूल निवासी नहीं थे। इस मिथ्या धारणाओं को न मानते हुए उत्तर लिखा कि आर्य लोग आर्यावृत के मूल निवासी है, यह बाहर से नहीं आये थे। परिणाम यह निकला कि पण्डित जी अन्य सभी विषयों में अच्छे अंक प्राप्त किये, परन्तु इतिहास विषय में अनुत्तीर्ण घोषित कर दिये गये। किन्तु भावी आर्य पथ का पथिक इन बाधाओं से टस से मस नही हुआ।

पुलिस के बड़े अधिकारी भी इनका मान करते थे- स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज लिखते हैं, "कैसी विचित्र घटना है कि जिस कृस्टी साहब ने उनके चाचा गण्डाराम जी की सिफारिश पर पण्डित लेखराम जी को पुलिस में भर्ती कराया था। लेखराम के बलिदान के पश्चात उन्हीं से मुझे घातक का पता

www.thearyasamaj.org

लगाने के लिए प्रार्थना करनी पड़ी। उन कृस्टी साहब ने पण्डित जी के विषय में यह विचार व्यक्त किये। मुझे ज्ञात था कि लेखराम अपनी निर्भीकता एवं स्पष्टता के कारण शीघ्र ही मारा जायेगा। उनकी दृढ़ता के लिए मेरे हृदय में सदा मान का भाव रहता था।''

प्रभु भक्ति में दृढ़ता- जब लेखराम जी 'सुआबी में अपने चाचा गण्डा राम जी के साथ रहते थे, उन दिनों की एक घटना का वर्णन उनके चाचा ने किया है-''प्रात: काल ब्रह्ममूर्हुत: में ही स्नान करके समाधि लगाकर बैठ जाते थे। इसी प्रकार सोने से पूर्व भी समाधि लगाया करते थे। एक रात्रि को खटिया पर समाधि लगाये बैठे थे कि सबके देखते-देखते खटिया से नीचे आ गिरे। सिर नीचे और पावें ऊपर हो गये, किन्तु उस अवस्था में भी अपने ध्यान में इतना मस्थ थे कि समाधि नहीं टूटी। यह था उनका प्रभु के प्रति दृढ़ विश्वास।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से भेंट- पं. लेखराम जी ने अपनी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से भेट का स्वयं वर्णन किया है। 17 मई 1881 का वह शुभ दिन था जिनसे उनके दर्शन से मार्ग के कष्ट विस्मृत हो गये और उनके सत्योपदेशों से सर्व संशय निवृत हो गये। जयपुर में मुझसे किसी ने एक प्रश्न किया था कि आकाश भी व्यापक है और ब्रह्म भी व्यापक है। दो व्यापक किस प्रकार एक स्थान पर इकट्ठे रह सकते हैं। मुझसे उसका कुछ उत्तर नहीं बन पाया था। मैंने यह प्रश्न स्वामी जी से पूछा। उन्होंने एक पत्थर उठाकर कहा, ''मिट्टी है कि नहीं? मैंने कहा कि व्यापक है। फिर पूछा, ''इसमें परमात्मा व्यापक है या नहीं? मैंने कहा कि वह भी व्यापक है। तब ऋषि जी ने कहा, ''देखा! कितने पदार्थ, परन्तु सबमें इसमें व्यापक है। वास्ताविकता यह है कि जो वस्तु जिससे सूक्ष्म होती है, वही उसमें व्यापक होता है। ब्रह्म क्यों कि सबमें सूक्ष्म है, अत: सर्व-व्यापक है।'' इससे मेरी जिज्ञासा शान्त हो गई।

ऋषि जी ने मुझे आज्ञा दी कि जो भी संशय मुझे हो, उनका निवारण कर लूं। मैंने बहुत सोच-समझकर 10 प्रश्न लिखे जिनमें से 3 प्रश्न मुझे स्मरण है। उनके उत्तर इस प्रकार हैं-

प्रश्न:1- जीव, ब्रह्म की भिन्नता में कोई प्रमाण बताइये।

उत्तर-यजुर्वेद का 40वां अध्याय सारा जीव और ब्रह्म का भेद बतलाता है।

प्रश्न 2-अन्य मतों के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिए या नहीं?

उत्तर-अवश्य शुद्ध करना चाहिए।

प्रश्न 3-बिजली क्या वस्तु है और कैसे पैदा होती है?

उत्तर-बिजली सब स्थानों में है और रगड़ से उत्पन्न होती है। बादलों की बिजली भी बादलों और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है।

अन्त में मुझे यह उपदेश दिया कि 25 वर्ष की आयु से पहले विवाह न करना। मैं अजमेर में उनके सन्निध्य में 24 मई 1881 तक रहा फिर उनसे अन्तिम विदा ली। मेरा और उनका पुन: मिलन न हो सका।''

ऋषि दयानन्द जी के इस थोड़े से सत्संग से लेखराम की काया पलट दी और वे दृढ़ संकल्पी, पक्के आर्य समाजी बन गये। अजमेर से लेखराम जी उसी प्रकार महान संकल्प और गुरु शिष्य लेकर निकले, जिस प्रकार ऋषि दयानन्द जी स्वयं मथुरा से गुरु विरजानन्द जी की कुटिया से निकले थे। एक ने गालियां खाकर, पत्थर खाकर, विष पीकर वेद की शिक्षा प्रदान की और दूसरे ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी और आर्य समाज रूपी वृक्ष को अपने रक्त से सींचा।

आर्य समाज में प्रविष्ट- शनै: शनै: आपका मन धर्म की ओर आकृष्ट होने लगा। अपने अध्ययनार्थ काशी से गीता भाष्य मंगवाया। उन्हीं दिनों आपको पंजाब के प्रसिद्ध सुधारक श्री कन्हैया लाल अलखधारी द्वार रचित धार्मिक साहित्य का पता चला आपने तत्काल ही उनका सब साहित्य मंगवाकर पढ़ डाला। इस साहित्य के अध्ययन से आदर्श सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अत्यन्त श्रद्धा हो गई। तत्कालीन समाचार पत्रों में महर्षि दयानन्द जी के प्रचार की धूम थी। पण्डित जी ने अद्वैतवाद को तिलाजंलि देकर संवत 1927 में विधिवत आर्य समाज में दीक्षित हो गये। ऋषि दयानन्द जी के सभी ग्रन्थ मंगवाकर पढ़ डाले और पण्डित जी की काया पलट गई। आप ऋषि लिखित प्रत्येक शब्द पर क्रियात्मक रूप से आचरण करने लगे। आप ऋषि के अनन्य भक्त और वैदिक धर्म के सच्चे पुजारी बन गये।

(शेष अगले अंक में)

www.thearyasamaj.org

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

डॉ. कान्ता देवी जी शर्मा दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	5000/-
श्री कर्ण सिंह जी अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य माजरा डबास	4500/-
वी.जी.एस. इंडस्ट्रीज, बहादुरगढ़	4104/-
श्री ओ.पी. गुप्ता जी अशोक विहार, दिल्ली	3100/-
सुनन्दा देवी सुपुत्री श्री राघवेन्द्र मलिक द्वारका दिल्ली	1111/-
श्रीमती मिथिलेश देवी जी धर्मपत्नी श्री सतेन्द्र जी, घनौरा टीकरी उत्तर प्रदेश	1100/-
श्री रमेशचन्द्र जी आर्य भजनोपदेशक झज्जर	1100/-
श्री पं. जयभगवान जी आर्य झज्जर, हरियाणा	1100/-
श्री विश्वनाथ जी आर्य अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री विवेकपुरी जी पुरी ऑयल मील, बहादुरगढ़	1100/-
श्री मंजीत जी दलाल आर्य नगर बहादुरगढ़	1100/-
कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री मांगेराम सुपुत्र श्री कन्हैया जी निजामपुर, दिल्ली	1100/-
श्री पूर्ण सिंह जी सुपुत्र श्री नोरंग सिंह जी टीकरी कला, दि.	1100/-
श्री पुरुषार्थ मुनि जी वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	1000/-
कुमारी मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र जी शर्मा बराही रोड, बहा.	1000/-
श्री अशोक जी कोमल ज्वैलर्स बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल जी वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती मायावती जी पत्नी मा. प्रकाशचन्द आर्य धनौरा, यू.पी.	1000/-
श्री सिद्धान्त जी दलाल सुपुत्र डॉ. राजवीर जी दलाल बहा.	1000/-
श्री सुरेन्द्र ओहल्याण सुपुत्र श्री दलेल सिंह ओहल्याण गढ़ी,	511/-
श्री मनीष छिल्लर सुपुत्र श्री सत्यवीर सिंह छिल्लर	501/-
श्री प्रेमसागर जी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-
डॉ. वीरपाल जी वेदालंकार गाजियाबाद	500/-
श्री रामकुमार जी छिकारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री कुलदीप राणा, लाईनपार जौहरी नगर, बहादुरगढ़	500/-

विशिष्ट भोजन

श्री सत्यवीर सिंह जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1 समय विशिष्ट भोजन
श्री विश्वनाथ जी आर्य अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़	1 समय विशिष्ट भोजन

विविध वस्तुएं

डा. पिंकी जी सैक्टर-7 हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, बहादुरगढ़	100 किलो आटा, 12 किलो दाल, 2 किलो तेल एवम् मसाले
श्री गुलशन कुमार जी धर्मपुरा बहादुरगढ़	18 किलो 500 ग्राम आटा
शन्टी होटल बस अड्डा बहादुरगढ़	11 किलो चीनी, 30 किलो दाल
श्री दीपेन्द्र डबास शनि मन्दिर टीकरी, दिल्ली	1 टीन सरसों तेल

गौशाला हेतु प्राप्त

श्री पुरुषार्थ मुनि जी वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	1000/-
श्री जितेन्द्र सिंह जी गांधी कॉलोनी, मुजफरनगर	5 बोरी खल
श्री रमण नरूला सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री सतीश जी वर्मा ओमैक्स सिटी बहादुरगढ़	500/-
श्री पूर्ण सिंह जी सुपुत्र श्री नौरंग सिंह जी टीकरी, नई दिल्ली	1100/-

दयानन्द की 193वीं जयन्ती

- आई.डी. गुलाटी संचालक, वीर सावरकर पुस्तकालय एवम् वाचनालय 18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

❑ ईसवीं सन् के हिसाब से आपकी जयन्ती 24 फरवरी को है। ❑ आपने 1875 में मुम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की। महाराष्ट्र में आर्य समाज का कार्य और प्रभाव कम ही है। ❑ आपकी देश को स्वतन्त्र देखने की प्रबल इच्छा थी। यदि आपको 17 बार जहर नहीं दिया गया होता तो आपकी आयु कई सौ वर्ष की होती। ❑ आपने राजनीतिक क्षेत्र में राजार्य सभा के नाम से कार्य किया होता। ❑ आपको राष्ट्रपिता की उपाधि दी जानी चाहिए क्योंकि स्वतन्त्रता का आह्वान सबसे पहले आपने ही किया था। ❑ सत्रहवीं शताब्दी में केवल दो शुद्धियां छत्रपति शिवाजी ने की थी लेकिन आपने शुद्धि का महत्व जाना था और बीसवीं और इक्सीवीं शताब्दी में जो शुद्धियां हुई है और अब हो रही हैं उसका श्रेय आपको ही है। ❑ आपकी ऊँचाई 7 फुट और वजन 240 किलो था। आप अपना स्मारक नहीं चाहते थे किन्तु अजमेर में स्मारक बन रहा है।

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 मार्च 2017 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

www.thearyasamaj.org

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें !! ओ३म् !! आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय

निःशुल्क ध्यान योग आसन प्राणायाम प्रशिक्षण शिविर

एवम्

अथर्ववेद 19-20 काण्ड बृहद् यज्ञ

सोमवार 27 मार्च 2017 से रविवार 02 अप्रैल 2017 तक

सानिध्यः- स्वामी धर्ममुनि जी महाराज (मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)

योग प्रशिक्षक एवम् यज्ञ ब्रह्माः-ब्रह्मनिष्ठ आचार्य सत्यवीर जी, (रोहिणी दिल्ली)

वेद पाठः-ब्र.बृज मोहन एवम् ब्रह्मचारी विपिन, आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा

मुख्य प्रवक्ताः-स्वामी रामानन्द जी सरस्वती, आचार्य खुशीराम जी (दिल्ली), आर्य तपस्वी जी, दिल्ली, आचार्य चांद सिंह जी आर्य, आचार्य रवि शास्त्री।

भजनोपदेशकः श्री वरूण शर्मा (युवा गायक अनहद म्यूजीकल), और आश्रम के ब्रह्मचारी एवम् कन्या गुरुकुल लौवा कलां की ब्रह्मचारिणयां।

दिनचर्याः सोमवार 27 मार्च 2017 को शिविर उद्घाटन सांय 4 बजे। मंगलवार 28 मार्च 2017 प्रातः 5 से 7 बजे तक। ध्यान योग साधना पश्चात् आसन प्राणायाम प्रशिक्षण 7:30 बजे से 10 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश, मध्यांह्नोपरान्त 4 बजे से 7 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश साधना 8:30 बजे 9:30 बजे तक मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन।

नोट- -शिविर मध्य महिलाए भी भाग ले सकती हैं। ❑ शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान ऋतु अनुसार बिस्तर एवम् कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संयोजकः

राजवीर जी आर्य, मो. 9811778655

निवेदक

स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी मुख्य अधिष्ठाता आश्रम, 9416054195	**सत्यानन्द आर्य** प्रधान ट्रस्ट, 9313923155	**दर्शन कुमार अग्निहोत्री** मन्त्री ट्रस्ट, 9810033799
विक्रमदेव शास्त्री व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062	**कन्हैयालाल आर्य** उपप्रधान ट्रस्ट, 9911197073	**सत्यपाल वत्सार्य** उपमन्त्री ट्रस्ट, 9416055359

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507

www.thearyasamaj.org

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
मार्च 2017
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

स्वामी शक्तिवेश का 28वां बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

प्रथम चित्र में मंचासीन पंडित रमेश चन्द्र जी वैदिक, श्री धनीराम जी बेधड़क मथुरा, स्वामी धर्ममुनि जी, कवि सम्राट सारस्वत मोहन मनीषी जी दिल्ली, श्री सत्यपाल जी वत्य आर्य, श्री सुभाष जी आर्य एवम् मंच संचालन करते हुए श्री पंडित जय भगवान जी आर्य। द्वितीय चित्र पंडित रमेश चन्द्र जी वैदिक, श्री सुर्यदेव जी, श्री धनीराम जी बेधड़क मथुरा, स्वामी धर्ममुनि जी अध्यक्षीय भाषण देते हुए एवम् कवि सम्राट सारस्वत मोहन मनीषी जी दिल्ली

आर्य समाज धनौरा टीकरी का 41वां स्थापना समारोह सम्पन्न

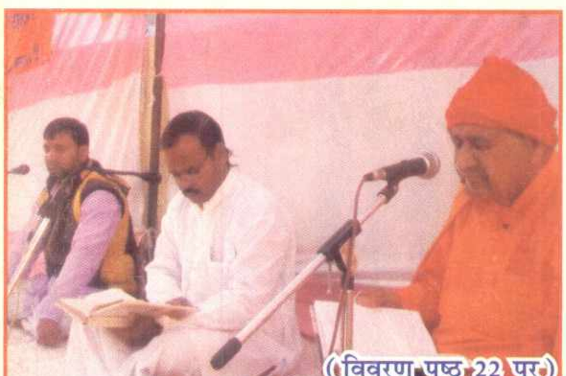

(विवरण पृष्ठ 22 पर)

डॉ. रवि शास्त्री जी, आचार्य विक्रम देव जी शास्त्री वेद पाठ करते हुए तथा पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी यज्ञ ब्रह्मा वेदमन्त्रों की व्याख्या करते हुए।